# परिषद् के पुरस्कार एवं पारितोषिक

# ICMR Awards & Prizes 2006

## प्रशस्तियां CITATIONS

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
Indian Council of Medical Research, New Delhi
September 2009

# परिषद् के पुरस्कार एवं पारितोषिक

# ICMR Awards & Prizes 2006

## प्रशस्तियां

## CITATIONS

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
Indian Council of Medical Research, New Delhi
September 2009

*प्रकाशन* : सितम्बर, 2009

| | | | |
|---|---|---|---|
| | डॉ विश्व मोहन कटोच | : | सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग,<br>भारत सरकार एवं महानिदेशक |
| | डॉ ललित कान्त | : | वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष<br>(अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभाग) |
| | डॉ के. सत्यनारायण | : | वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष<br>(प्रकाशन एवं सूचना) |
| *संकलन* : | डॉ मुकेश कुमार | : | वैज्ञानिक 'ई' |
| | डॉ हरप्रीत संधू | : | वैज्ञानिक 'डी' |
| *हिन्दी रूपान्तरण* : | डॉ के. एन. पाण्डेय | : | वैज्ञानिक 'डी' |
| | डॉ रजनी कान्त | : | वैज्ञानिक 'डी' |
| *प्रोडक्शन नियंत्रक* : | जे. एन. माथुर | : | प्रेस प्रबंधक |

महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की ओर से प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग द्वारा प्रकाशित।

# विषय सूची


| पुरस्कार का नाम | | प्राप्तकर्ताओं के नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| | *परिषद् के पुरस्कार – 2006* | | |
| 1. | अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार | डॉ दिगम्बर बेहरा | 1 |
| 2. | बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार (2007) | • डॉ वेदान्तम राजशेखर | 2 |
| | | • डॉ सुरेन्द्र कुमार शर्मा | 3 |
| 3. | बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार | डॉ आर. एस. बलगीर | 4 |
| 4. | डॉ धरमवीर दत्ता स्मारक व्याख्यान पुरस्कार | डॉ अजय कुमार दुसेजा | 5 |
| 5. | डॉ कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार | प्रो एम. बाजपेयी | 6 |
| 6. | डॉ एम. के. शेषाद्री पुरस्कार | डॉ कमलेश सरकार | 7 |
| 7. | डॉ पी.एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार | डॉ प्रेमाशीष कार | 8 |
| 8. | डॉ विद्या सागर पुरस्कार | डॉ प्रभा एस. चन्द्रा | 9 |
| 9. | डॉ वाई. एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार | डॉ जे.एस. विरदी | 10 |
| 10. | आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार | • डॉ मोली जैकब | 11 |
| | | • डॉ रेनू सक्सेना | 12 |
| 11. | अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार | डॉ एम.के. दास | 13 |
| 12. | अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार | डॉ पी. सुन्दरेशन | 14. |
| 13. | आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार | डॉ अरुणा मित्तल | 15 |
| 14. | आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार | डॉ अनिल भंसाली | 16 |
| 15. | जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार | डॉ ओम प्रकाश | 17 |
| 16. | मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार | डॉ शशिरेखा रमणी | 18 |
| 17. | नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार | डॉ सुनीता सक्सेना | 19 |
| 18. | प्रो बी.सी. श्रीवास्तव संस्थापना पुरस्कार | डॉ विनोद जोसेफ अब्राहम | 20 |
| 19. | प्रो बी. के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार | डॉ राकेश अग्रवाल | 21 |
| 20. | प्रो सुरिन्दर मोहन मारवाह पुरस्कार | डॉ हरबीर सिंह कोहली | 22 |
| 21. | शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार | • डॉ श्याम एस. शर्मा | 23 |
| | | • डॉ सुरिन्दर सिंह राणा | 24 |
| | | • डॉ जी. वेंकटसुब्रामणियन | 25 |
| | | • डॉ रुचि सिंह | 26 |
| 22. | श्रीमती कमल सतबीर पुरस्कार | डॉ बालमुगेश थंगाकुनम | 27 |

# CONTENTS


| | Name of the Award | Awardee | Page No. |
|---|---|---|---|
| | ***ICMR AWARDS – 2006*** | | |
| 1. | Amrut Mody Unichem Prize | Dr. Digamber Behera | 1 |
| 2. | Basanti Devi Amir Chand Prize (2007) | • Dr. Vedantam Rajshekhar | 2 |
| | | • Dr. Surendra Kumar Sharma | 3 |
| 3. | BGRC Silver Jubilee Oration Award | Dr. R.S. Balgir | 4 |
| 4. | Dr. Dharamvir Datta Memorial Oration Award 2006 | Dr. Ajay Kumar Duseja | 5 |
| 5. | Drs. Kunti & Om Prakash Oration Award | Prof. M. Bajpai | 6 |
| 6. | Dr. M.K. Seshadri Prize | Dr. Kamalesh Sarkar | 7 |
| 7. | Dr. P.N. Raju Oration Award | Dr. Premashish Kar | 8 |
| 8. | Dr. Vidya Sagar Award | Dr. Prabha S. Chandra | 9 |
| 9. | Dr. Y.S. Narayana Rao Oration Award | Dr. J.S. Virdi | 10 |
| 10. | ICMR Kshanika Oration Award | • Dr. Molly Jacob | 11 |
| | | • Dr. Renu Saxena | 12 |
| 11. | ICMR Prize for Biomedical Research Conducted in Underdeveloped Areas | Dr. M.K. Das | 13 |
| 12. | ICMR Prize for Biomedical Research for Scientists Belonging to Underprivileged Communities | Dr. P. Sundaresan | 14 |
| 13. | ICMR Lala Ram Chand Kandhari Award | Dr. Aruna Mittal | 15 |
| 14. | ICMR M.N. Sen Oration Award | Dr. Anil Bhansali | 16 |
| 15. | Jalma Trust Fund Oration Award | Dr. Om Parkash | 17 |
| 16. | Major General Saheb Singh Sokhey Award | Dr. Sasirekha Ramani | 18 |
| 17. | Novartis Oration Award | Dr. Sunita Saxena | 19 |
| 18. | Prof. B.C. Srivastava Foundation Award | Dr. Vinod Joseph Abraham | 20 |
| 19. | Prof. B.K. Aikat Oration Award | Dr. Rakesh Aggarwal | 21 |
| 20. | Prof. Surindar Mohan Marwah Award | Dr. Harbir Singh Kohli | 22 |
| 21. | Shakuntala Amir Chand Prize | • Dr. Shyam S. Sharma | 23 |
| | | • Dr. Surinder Singh Rana | 24 |
| | | • Dr. G. Venkatasubramanian | 25 |
| | | • Dr. Ruchi Singh | 26 |
| 22. | Smt. Kamal Satbir Award | Dr. Balamugesh Thangakunam | 27 |

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ दिगम्बर बेहरा

अमृत मोदी यूनिकेम पुरस्कार जठरांत्ररोगविज्ञान/हृदयरोगविज्ञान/तंत्रिकाविज्ञान/मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य/वक्ष रोगों के क्षेत्र में शोधकार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है। प्रत्येक वर्ष बारी-बारी से विषयों का चयन किया जाता है, वर्ष 2006 के लिए वक्ष रोगों का चयन किया जा रहा है। इसका मूल्यांकन विषय क्षेत्र में सक्रिय रूप से संबद्ध किसी शोधकर्ता द्वारा मौजूदा जानकारी में किए गए महत्वपूर्ण योगदानों पर आधारित है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित एल आर एस क्षयरोग एवं श्वसनी रोग संस्थान के निदेशक डॉ दिगम्बर बेहरा को ''फेफड़े के कैंसर'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ बेहरा को फुप्फुस कैंसर के क्षेत्र में चिकित्सीय और आण्विक दोनों पहलुओं पर शोध कार्य करने का पर्याप्त अनुभव प्राप्त है। वे इलाज संबद्ध व्यय, विषाक्तता और रोगियों के समग्र हित को ध्यान में रखते हुए भारतीय स्थितियों के लिए अनुकूल एक चिकित्सा प्रोटोकॉल विकसित करने में समर्थ रहे हैं। फुप्फुस कैंसर ग्रस्त भारतीय रोगियों के लिए नॉन-स्माल कोशिका फुप्फुस कार्सिनोमा के लिए सिसप्लैटिन के साथ डोसी टैक्सेल और स्माल कोशिका फुप्फुस कार्सिनोमा के लिए सिसप्लैटिन के साथ आइरिनरोटेकन एक बेहतर रसायनचिकत्सिा विधान प्रतीत होता है। माध्यिक उत्तरजीविता में दस माह से अधिक अवधि का सुधार हुआ हैं तथा 1 वर्ष और 2 वर्षों की बेहतर उत्तरजीविता दरें प्राप्त हुई हैं। आर्थिक रूप से कमजोर रोगियों के लिए आइफॉस्फामाइड युक्त विधान एक परिवर्तक विकल्प है। डॉ बेहरा ने प्रदर्शित किया है कि फेफड़े के कैंसर की उत्पति में ऑक्सीकरों और ऑक्सीकर रोधियों के बीच असंतुलन की एक प्रमुख भूमिका होती है। उन्होंने एपोपटोसिस के रोगजनन और नियमन में विभिन्न जीनों की भूमिका का भी अध्ययन किया है।

डॉ बेहरा आई सी एम आर के श्रीमती कमल सतबीर पुरस्कार, चारु चन्द्र दास स्मारक पुरस्कार, सामंता चन्द्र शेखर पुरस्कार, डॉ बी.सी. रॉय पुरस्कार तथा सिपला वक्ष व्याख्यान पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। डॉ बेहरा को 260 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



## AMRUT MODY UNICHEM PRIZE
### 2006

### CITATION

### DR. DIGAMBER BEHERA

Amrut Mody Unichem Prize is awarded to a scientist for the research work carried out in the field of Gastroenterology/Cardiology/Neurology/Maternal & Child Health/Chest Diseases. The subjects are alternated each year with Chest Diseases being chosen for the year 2006. The assessment is based on the significant contributions made by a researcher to the existing knowledge in a subject area in which he/she has been actively engaged.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Digamber Behera, Director, LRS Institute of Tuberculosis and Respiratory Diseases, New Delhi for his research work on "Lung cancer".

Dr. Behera has considerable experience in the area of lung cancer research, both clinical and molecular. He has been able to develop a treatment protocol suitable for Indian situations taking into account the cost, toxicity and overall benefit to the patient. A better chemotherapy regimen for Indian lung cancer patients seem to be docetaxel with cisplastin for non-small cell lung carcinoma and irinotecan with cisplastin for small cell lung carcinoma. The median survival has improved to more than ten months with better one year and two year survival rates. For economically weaker patients, ifosfamide containing regimen is an alternate option. Dr. Behera has shown that an imbalance between the oxidants and antioxidants play a major role in the causation of lung cancer. He has also studied the role of various genes in the pathogenesis and regulation of apoptosis.

Dr. Behera has been felicitated with many awards including Smt. Kamal Satbir Award of ICMR, Charu Chandra Das Memorial Award, Samanta Chandra Sekhar Award, Dr.B.C.Roy Award and Cipla Chest Oration Award. Dr. Behera has more than 260 research publications to his credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार

## 2007

## प्रशस्ति

## डॉ वेदान्तम राजशेखर

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण अनुसंधान योगदानों के लिए दिए जाने वाले परिषद के सबसे पुराने बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार की स्थापना स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने वर्ष 1953 में की थी।

वर्ष 2007 का यह पुरस्कार संयुक्त रूप से वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज के तंत्रिकाविज्ञान विभाग के तंत्रिका शल्यक्रिया के आचार्य डॉ वेदान्तम राजशेखर को ''सिस्टीसर्कोसिस'' पर उनके शोधकार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ राजशेखर ने विगत दो दशकों के दौरान सिस्टीसर्कोसिस के क्षेत्र में प्रमुख योगदान दिए हैं। उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ दौरा से ग्रस्त भारतीय रोगियों की सी टी स्कैन द्वारा संपन्न जांच के परिणामस्वरूप एकल, लघु और बढ़ती विक्षतियों (SSECTL) की वास्तविक प्रकृति की पहली बार पहचान की है। उनके दल ने स्टीरिओटैक्टिक तकनीकों की सहायता से प्रदर्शित किया है कि SSECTL की अधिकांश स्थितियां एक तरह की तंत्रिका सिस्टीसर्कोसिस थीं जो सोलिटैरी सिस्टीसर्कस ग्रैनुलोमा (एस सी जी) नामक एकल विक्षतियों के रूप में प्रस्तुत हुई थीं। डॉ राजशेखर ने एस सी जी के लिए नैदानिक मापदण्डों की खोज की है जिनके द्वारा सोलिटैरी ट्युबरकुलोमा के साथ-साथ मस्तिष्क की अन्य विक्षतियों और एस सी जी के बीच अंतर स्पष्ट होता हैं तथा चिकित्सकों को यक्ष्मा रोधी चिकित्सा जैसी अनावश्यक एवं अनुपयुक्त अनुभववादी चिकित्सा से बचने में सहायता मिलती है। उन्होंने एक जन स्वास्थ्य पहलू के रूप में तंत्रिका सिस्टीसर्कोसिस की बड़ी समस्या पर समुदाय आधारित अध्ययन भी किए हैं। जिनके परिणामस्वरूप सिस्टीसर्कोसिस के नियंत्रण के कुछ उपाय खोजे जा सकते हैं। डॉ राजशेखर ने सीरम में सिस्टीसर्कल प्रतिपिण्डों की जांच के लिए एंज़ाइम लिंक्ड एम्यूनोट्रांसफर ब्लॉट परीक्षण विधि में अनेक शोधन किए हैं जिससे एस सी जी ग्रस्त रोगियों में इसकी सुग्राह्यता बेहतर की जा सके। उन्होंने अनेक अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सिस्टीसर्कोसिस के निदान, चिकित्सा प्रबंध और नियंत्रण उपायों जैसे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने और एक मतैक्य स्थापित करने हेतु भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

डॉ राजशेखर को आई सी एम आर के शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार और क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर के फादर लोर्डू एफ. येदनापल्ली पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने 150 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



## BASANTI DEVI AMIR CHAND PRIZE
## 2007

## CITATION

## DR. VEDANTAM RAJSHEKHAR

The Basanti Devi Amir Chand Prize is the earliest instituted award of ICMR, founded in 1953 by late Major General Amir Chand for the significant research contributions made by scientists in the field of biomedical sciences.

The award for the year 2007 is being jointly presented to Dr. Vedantam Rajshekhar, Professor of Neurosurgery, Department of Neurological Sciences, Christian Medical College, Vellore for his work on "Cysticercosis".

Dr.Rajshekhar has made major contributions in the field of Cysticercosis during the past two decades. He and his colleagues were the first to identify the true nature of Single, Small, Enhancing Lesions on CT scans (SSECTL) of Indian patients with seizures. Using stereotactic techniques his team demonstrated that the vast majority of SSECTL were a form of Neurocysticercosis (NCC) which presented as single lesions, namely, the Solitary Cysticercus Granuloma (SCG). Dr. Rajshekhar has devised diagnostic criteria for SCG which distinguishes SCG from solitary tuberculomas and other brain lesions and helps clinicians in avoiding unnecessary and inappropriate empiric therapy such as antituberculous therapy. He has also performed community-based studies on the larger problem of NCC as a public health issue, which may lead to some control measures for cysticercosis. Dr.Rajshekhar has made several refinements to the Enzyme Linked Immunotransfer Blot test for cysticercal antibodies in serum to improve its sensitivity in patients with SCG. He has represented India at several international fora to discuss and arrive at a consensus on various aspects of Cysticercosis including diagnosis, management and control measures.

Dr. Rajshekhar is the recipient of many awards including the Shakuntala Devi Amir Chand Prize of ICMR and Fr. Lourdu F. Yeddanapalli Award of CMC Vellore. He has more than 150 research publications to his credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार

## 2007

## प्रशस्ति

## डॉ सुरेन्द्र कुमार शर्मा

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण अनुसंधान योगदानों के लिए दिए जाने वाले परिषद के सबसे पुराने बसन्ती देवी अमीर चन्द पुरस्कार की स्थापना स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने वर्ष 1953 में की थी।

वर्ष 2007 का यह पुरस्कार संयुक्त रूप से नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्साविज्ञान विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ सुरेन्द्र कुमार शर्मा को ''क्षयरोग'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ शर्मा ने क्षयरोग, सार्कायडोसिस, श्वसनी  दमा, अंतरालीय फुप्फुस रोगों और निद्रा विकारों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिए हैं। उन्होंने मिलियरी क्षयरोग और बहु औषध प्रतिरोधी क्षयरोग पर व्यापक शोध कार्य किया है। भारत में *माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलोसिस* के औषध प्रतिरोधी आइसोलेट्स की *IS6110* के साथ टाइपिंग पर संपन्न उनके शोधकार्य के परिणामस्वरूप पर्याप्त पॉलीमॉर्फिज़्म की स्थिति का पता चला है। डॉ शर्मा ने एच आई वी रहित रोगियों में बहु औषध प्रतिरोधी क्षयरोग के विकास के लिए जिम्मेदार चिकित्सीय और आनुवंशिक खतरे वाले कारकों का मूल्यांकन किया है। उन्होंने ह्युमन ल्यूकोसाइट एंटीजन (एच एल ए) अणुओं के पेप्टाइड बंधनकारी पॉकेट्स में एक शेयर्ड सीक्वेंस मोटिफ के आधार पर क्षयरोग में एच एल ए क्लास 1 की संबद्धता का भी वर्णन किया है। फुप्फुसरोगविज्ञान (पल्मोनोलॉजी) के क्षेत्र में डॉ शर्मा के अनुसंधान प्रयास अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य हैं।

डॉ शर्मा को रैनबैक्सी अनुसंधान पुरस्कार, ल्युपिन वक्ष व्याख्यान पुरस्कार और आई सी एम आर के एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 300 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



### BASANTI DEVI AMIR CHAND PRIZE
### 2007

### CITATION

### DR. SURENDRA KUMAR SHARMA

The Basanti Devi Amir Chand Prize is the earliest instituted award of ICMR, founded in 1953 by late Major General Amir Chand for the significant research contributions made by scientists in the field of biomedical sciences.

The award for the year 2007 is being jointly presented to Dr. Surendra Kumar Sharma, Professor & Head, Department of Medicine, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for his work on "Tuberculosis".

Dr. Sharma has made outstanding contributions in the field of tuberculosis, sarcoidosis, bronchial asthma, interstitial lung diseases and sleep disorders. He has done extensive research work in miliary tuberculosis and on multi-drug resistant tuberculosis. His work on typing of drug resistant isolates of *Mycobacterium tuberculosis* from India using the IS6110 element reveals substantial polymorphism. Dr. Sharma has evaluated the clinical and genetic risk factors for the development of multi-drug resistant tuberculosis in non-HIV patients. He has also delineated Human Leukocyte Antigen (HLA) class I association in tuberculosis on the basis of a shared sequence motif in peptide binding pockets of HLA molecules. Dr. Sharma's research efforts in Pulmonology are internationally recognized.

Dr. Sharma has been felicitated with many prestigious awards including Ranbaxy Research Award, Lupin Chest Oration Award and M.N.Sen Oration Award of ICMR. He has published more than 300 research papers in national and international journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ आर. एस. बलगीर

इस पुरस्कार की संस्थापना भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के प्रतिरक्षा रुधिरविज्ञान संस्थान (पूर्व रक्त वर्ग संदर्भ केन्द्र) द्वारा वर्ष 1982 में की गई थी और इसे रुधिरविज्ञान/प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार जबलपुर स्थित क्षेत्रीय जनजातीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (आई सी एम आर) के वैज्ञानिक 'एफ' डॉ आर. एस. बलगीर को ''जन स्वास्थ्य आनुवंशिकी और सामुदायिक हीमोग्लोबिन विकृतियों'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ बलगीर के शोध कार्य से पता चला है कि भारत में सिकिल कोशिका –बीटा–थैलासीमिया में आनुवंशिक विषमांगता की उपस्थिति है। रुधिर आनुवंशिकी में यह एक मील का पत्थर है कि पहली बार उड़ीसा राज्य के आठ विभिन्न जिलों में स्थित सुदूर, कठिनाईपूर्ण पहुंच वाले पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले 15 प्रमुख जनजातीय आइसोलेट्स का जैविक रूप से पूर्णतया अध्ययन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न आनुवंशिक चिन्हकों के संदर्भ में विषमांगता और विविधता की स्थितियां देखी गईं। डॉ बलगीर के अध्ययनों से उड़ीसा के मलेरिया स्थानिक जनजातीय समुदायों में संपन्न एक क्रॉस–सेक्शन में सिकिल कोशिका एलील और G-6-PD अल्पता, तथा सिकिल कोशिका बीटा–थैलासीमिया एलील के बीच प्रतिलोम संबंध की एक विकासात्मक प्रवृत्ति भी देखी गई है। उड़ीसा की जनजातीय आबादियों में पहली बार हीमोग्लोबिन ई, हीमोग्लोबिन डी, असामान्य हीमोग्लोबिंस हेतु मिश्रित विषमयुग्मता और भ्रूणीय हीमोग्लोबिन के वंशागत स्थायित्व जैसे हीमोग्लोबिन के अनेक दुर्लभ परिवर्तों की पहचान की गई है।

डॉ बलगीर अपने शोध कार्य की मान्यता में चिकित्साविज्ञान में विशिष्टता पुरस्कार, मनोरमा सपरे व्याख्यान पुरस्कार तथा भारत विशिष्टता पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में 45 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



## BGRC SILVER JUBILEE ORATION AWARD

## 2006

## CITATION

## DR. R.S. BALGIR

This award was instituted by the Institute of Immunohaematology (the former Blood Group Reference Centre) of the ICMR in 1982 and is granted to a scientist for his/her research work carried out over a period of time in the field of Haematology/ Immunohaematology.

The award for the year 2006 is being presented to Dr.R.S.Balgir, Scientist 'F', Regional Medical Research Centre for Tribals (ICMR), Jabalpur for his work on "Public Health Genetics and Community Hemoglobinopathies".

Dr. Balgir's work has revealed that genetic heterogeneity of sickle cell-β-thalassemia exists in India. A major milestone in hemato-genetics is that for the first time 15 major tribal isolates living in remote, inaccessible hilly areas scattered in eight different districts in the state of Orissa have been completely biologically mapped out, showing heterogeneity and diversity with respect to various genetic markers. Dr. Balgir's studies have also shown an evolutionary trend for inverse relationship between the sickle cell allele and G-6-PD deficiency, and sickle cell β-thalassemia allele in a cross-section of malaria endemic tribal communities in Orissa. Several rare hemoglobin variants like hemoglobin E, hemoglobin D, compound heterozygosity for abnormal hemoglobins and hereditary persistence of fetal hemoglobin has been identified for the first time in the tribal populations of Orissa.

Dr. Balgir has been felicitated with Excellence Award in Medicine, Manorama Sapre Oration Award and Bharat Excellence Award in recognition of his work. He has more than 45 scientific publications in international and national journals to his credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ धरमवीर दत्ता स्मारक व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ अजय कुमार दुसेजा

डॉ धरमवीर दत्ता स्मारक व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना डॉ उषा दत्ता ने अपने स्वर्गीय पति डॉ धरमवीर दत्ता की स्मृति में की थी जो चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान में यकृतरोगविज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष थे। यह पुरस्कार भारत में यकृत रोगों के क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है जिसके परिणामों को चिकित्सीय यकृत रोगविज्ञान में प्रयोग किए जाने का विशेष संदर्भ हो।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के यकृतरोगविज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ अजय कुमार दुसेजा को ''भारत में गैर अल्कोहलिक वसीय यकृत रोग'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ दुसेजा ने भारत में गैर अल्कोहलिक वसीय यकृत रोग (एन ए एफ एल डी) के जानपदिक रोगविज्ञान, चिकित्सीय-विकृतिविज्ञानी स्वरूप, विकृतिजनन और इलाज जैसे विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन किया है। गैर अल्कोहलिक वसीय यकृत रोग सहित भारतीय रोगी इस रोग से पीड़ित पश्चिम के रोगियों से भिन्न होते हैं। इस रोग से पीड़ित भारतीय रोगियों में उपस्थित प्रमुख भिन्नताओं में रुग्ण स्थूलता में कमी, चयापचय संलक्षण तथा मधुमेह मेलिटस में कमी जैसी स्थितियां सम्मिलित हैं जिसके अन्तर्गत ट्रांसएमीनेज़ेज में वृद्धि, लौह की भूमिका नहीं होने, HFE जीन उत्परिवर्तनों तथा रोग की ऊतक संबंधी गंभीरता मन्द होने जैसी स्थितियां प्रस्तुत होती हैं। डॉ दुसेजा ने पहली बार वर्णन किया है कि इंसुलिन प्रतिरोध की माप करने के लिए एन ए एफ एल डी सहित रोगियों में इंसुलिन सह्यता परीक्षण (आई टी टी) एक सस्ती और पुनरुत्पादक विधि है और वह इंसुलिन प्रतिरोध हेतु होमियोस्टैसिस मॉडेल एसेस्मेंट (एच ओ एम ए-आई आर) के समान है। उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया है कि मेटफॉर्मिन से उपचारित रोगियों में ए एल टी स्तरों में गिरावट सहित आंशिक जीवरासायनिक अनुक्रिया देखी गई।

डॉ दुसेजा अपने शोध कार्य की पहचान में आई एस जी- अलकेम ओम प्रकाश स्मारक पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं तथा उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय जर्नलों में 60 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## DR. DHARAMVIR DATTA MEMORIAL ORATION AWARD 2006

### CITATION

### DR. AJAY KUMAR DUSEJA

Dr. Dharamvir Datta Memorial Oration Award was instituted by Dr. Usha Datta, in memory of her late husband Dr. Dharamvir Datta, former Head of the Department of Hepatology, PGIMER, Chandigarh. It is awarded to a scientist for work carried out in the field of Liver Diseases in India with special reference to application of findings to Clinical Hepatology.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Ajay Kumar Duseja, Assistant Professor, Department of Hepatology, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh for his work on "Non-alcoholic fatty liver disease in India".

Dr. Duseja has evaluated various aspects such as epidemiology, clinico pathological profile, pathogenesis and treatment of the Non-Alcoholic Fatty Liver Disease (NAFLD) in India. The Indian patients with NAFLD are different from that in the West. The major differences are less of morbid obesity, less of diabetes mellitus and metabolic syndrome in Indian patients with NAFLD presenting with raised transaminases, no role of iron and HFE gene mutations and mild histological severity of disease at presentation. Dr. Duseja has reported for the first time that Insulin Tolarance Test (ITT) in patients with NAFLD is a cheap and reproducible method to measure insulin resistance and is comparable to Homeostasis Model Assessment for Insulin Resistance (HOMA-IR). He has also shown that patients treated with metformin achieve partial biochemical response with reduction in ALT levels.

Dr. Duseja has been felicitated with ISG-Alkem Om Prakash Memorial Award in recognition of his work and has more than 60 scientific publications in various international and national journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ कुन्ती एवं डॉ ओम प्रकाश व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## प्रो एम. बाजपेयी

इस पुरस्कार की संस्थापना सर्वश्री विपुल एवं राहुल प्रकाश द्वारा उनके माता-पिता डॉ कुन्ती और डॉ ओम प्रकाश, क्रमशः सूक्ष्मजीवविज्ञानी एवं परजीवविज्ञानी की स्मृति में वर्ष 2005 में की गई थी। यह जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को दिया जाता है और वर्ष 2006 का पुरस्कार असंचारी रोगों के क्षेत्र में प्रदान किया जा रहा है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के बाल शल्यक्रिया विभाग के आचार्य डॉ एम. बाजपेयी को ''जन्मजात एकपार्श्वीय यूरेटेरोपेल्विक जंक्शन अवरोध में चिरकारी इंटरस्टीशियल वृक्कविकृति के चिन्हक'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ बाजपेयी ने प्लाज़्मा रेनिन के पूर्वानुमानिक महत्व पर कार्य किया है क्योंकि यूरेटेरोपेल्विक जंक्शन पर अवरोध की सही डिग्री ज्ञात करने में तकनीकी सीमाएं होने के कारण प्रसवपूर्व पहचान किए गए हाइड्रोनेफ्रोसिस के अनुकूलतम चिकित्सा प्रबंध का विषय विवादित है। इन रोगियों में यूरेटेरोपेल्विक जंक्शन में अवरोध, गंभीर उदर पीड़ा और वृक्कीय कार्य में ह्रास जैसी स्थितियों का नियमित अध्ययन किया गया। डॉ बाजपेयी ने अपने व्याख्यात्मक अध्ययन में वृक्कीय कार्य का मूल्यांकन करने हेतु एक अतिरिक्त माप के रूप में प्लाज़्मा रेनिन की क्रियाशीलता की स्थिति ज्ञात की है। प्लाज़्मा रेनिन की क्रियाशीलता प्रस्तुति के समय से शल्यक्रिया की अवधि तक उत्तरोत्तर बढ़ गई। शल्यक्रिया के उपरांत सभी बच्चों में यह घट गई और स्थाई हो गई। प्लाज़्मा रेनिन की क्रियाशीलता अवरोधी दबाव को व्यक्त करती है तथा यह वास्तविक वृक्कीय आघात यथा-स्प्लिट वृक्कीय कार्य तथा ग्लोमेरुलर फिल्ट्रेशन रेट जैसे पैरामीटरों से पहले प्रकट होती है।

डॉ बाजपेयी ने वैज्ञानिक जर्नलों में 60 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। वे आई सी एम आर के डॉ कमला मेनन आयुर्विज्ञान अनुसंधान पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## DRS. KUNTI & OM PRAKASH ORATION AWARD

### 2006

### CITATION

### PROF. M. BAJPAI

This award was instituted in 2005 by Messrs Vipul and Rahul Prakash in memory of their parents, Drs. Kunti and Om Prakash, a Microbiologist and Parasitologist respectively. It is conferred on a scientist for excellence achieved in the field of biomedical sciences and is being offered in the field of Non-Communicable Diseases for the year 2006.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. M.Bajpai, Professor, Department of Paediatric Surgery, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for his work on "Markers of chronic interstitial nephropathy in congenital unilateral ureteropelvic junction obstruction".

Dr. Bajpai worked on the prognostic significance of plasma renin activity since there is a controversy surrounding the optimal management of prenatally diagnosed hydronephrosis due to technical limitations in accurately quantifying the degree of obstruction at the ureteropelvic junction. These patients are regularly investigated for ureteropelvic junction obstruction, severe abdominal pain, abdominal lump and deterioration in renal function. In his descriptive study, Dr. Bajpai quantified the plasma renin activity as an additional measure to evaluate renal outcome. Plasma renin activity progressively increased from the time of presentation to the time of surgery. It was reduced and stabilized in all children postoperatively. Plasma renin activity reflects obstructive stress, and precedes parameters of actual renal injury, such as split renal function and glomerular filtration rate.

Dr. Bajpai has contributed more than 60 research papers in scientific journals. He has also been bestowed with Dr.Kamla Menon Medical Research Award of ICMR.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ एम. के. शेषाद्री पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ कमलेश सरकार

डॉ एम. के. शेषाद्री पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1977 में श्रीमती शेषाद्री द्वारा उनके पति की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार एक वैज्ञानिक को सामुदायिक चिकित्साविज्ञान के क्षेत्र में संपन्न उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्र रोग संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ कमलेश सरकार को ''सामुदायिक चिकित्साविज्ञान'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सरकार ने जन स्वास्थ्य महत्व के रोगों के नियंत्रण के क्षेत्र में योगदान दिया है। उन्होंने एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम के माध्यम से एच आई वी के जानपदिक रोगविज्ञान विशेषतया इंजेक्शन द्वारा नशीली दवाइयों के प्रयोगकर्ताओं और पेशेवर यौनकर्मियों का अध्ययन किया है जिससे इसके निवारण और नियंत्रण हेतु समुदाय पर आधारित उपयुक्त इंटरवेंशन नीतियों का पता लगाया जा सके। डॉ सरकार ने पहली बार प्रदर्शित किया है कि मौजूदा जानकारी के विपरीत पश्चिम बंगाल राज्य में एच आई वी की व्यापकता कम नहीं है। उनके दल ने पश्चिम बंगाल के इंजेक्शन द्वारा नशीली दवाइयों के प्रयोगकर्ताओं में एच आई वी की एक महामारी का पता लगाया है जिसके परिणामस्वरूप पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा तत्काल इंटरवेंशन उपाय किए गए।

डॉ सरकार ने विभिन्न वैज्ञानिक जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

### DR. M.K. SESHADRI PRIZE
### 2006

### CITATION
### DR. KAMALESH SARKAR

Dr. M.K.Seshadri Prize was instituted in 1977 by Smt. Seshadri in memory of her husband. It is offered to a scientist for outstanding contributions made in the field of Community Medicine.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Kamalesh Sarkar, Scientist 'D', National Institute of Cholera & Enteric Diseases, Kolkata for his work on "Community Medicine".

Dr. Sarkar has made contributions in the field of control of diseases of public health importance. Through the integrated disease surveillance programme, he has studied the epidemiology of HIV, particularly in Injecting Drug Users (IDUs) and sex workers with the objective of finding out suitable community based intervetion strategies for its prevention and control. Dr. Sarkar has shown for the first time that West Bengal is no more a low HIV prevalent State contrary to the existing knowledge. His team explored an epidemic of HIV in IDUs of West Bengal that trigerred immediate intervention measures taken up by the Govt. of West Bengal.

Dr. Sarkar has contributed more than 30 research papers in various scientific journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ पी.एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ प्रेमाशीष कार

डॉ पी.एन. राजू व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1965 में विशाखापट्टनम के एक चिकित्सक डॉ नरसिम्हा राजू द्वारा की गई थी। यह पुरस्कार एक चिकित्सक को चिकित्साविज्ञान अथवा जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के किसी भी विषय में उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है, और वर्ष 2006 के लिए यह पुरस्कार चिकित्साविज्ञान (चिकित्सीय अनुसंधान) के क्षेत्र में दिया जा रहा है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज एवं संबद्ध लोक नायक अस्पताल के चिकित्साविज्ञान विभाग के आचार्य डॉ प्रेमाशीष कार को ''यकृतशोथ ए संक्रमण'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ कार के अध्ययनों से देखा गया है कि भारत की शहरी आबादी में यकृतशोथ ए विषाणु संक्रमण के सीरम जानपदिक रोगविज्ञान में परिवर्तन प्रतीत होता है, जैसा कि युवा आबादी में इसकी सीरम व्यापकता की संख्या बढ़ती हुई अधिक विकसित यूरोपीय देशों के समान होती जा रही है। छात्रों की वैक्सीनेशन-पूर्व प्रतिरक्षा स्थिति की जांच के पश्चात उनका किसी स्वास्थ्य सुरक्षा केन्द्र पर एच ए वी के विरुद्ध टीकाकरण किया जाना चाहिए। जानपदिक रोगविज्ञान में परिवर्तन होने तथा स्थानिकता में वृद्धि होने के कारण तीव्र एच ए वी संक्रमण का स्वरूप अलाक्षणिक बालकालीन संक्रमण से बदलकर 18-40 वर्षीय आयु वर्ग में लाक्षणिक रोग की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं, इसलिए एच ए वी प्रतिपिण्ड के सीरमविज्ञानी अध्ययनों पर आधारित उच्च खतरे वाली आबादी का चयनित टीकाकारण युक्तिमूलक और मूल्य प्रभावी हो सकता है। डॉ कार के शोध कार्य से संकेत मिलता है कि उत्तर भारत में जीनोटाइप्स IA ओर IIIA दोनों की व्यापकता लगभग समान रूप से है। तीव्र एकृतशोथ ए पर संपन्न उनके अध्ययनों से देखा गया है कि वाइरीमिया (विषाणुरक्ता) की अवधि परपोषी पर निर्भर करती है और गंभीर प्रकार की तुलना में गैर-जटिल तीव्र विषाणुज यकृतशोथ ग्रस्त रोगियों के चिकित्सीय परिणाम में विषाणुज जीनोटाइप्स की स्पष्ट भूमिका प्रतीत नहीं होती।

डॉ कार ने विभिन्न जर्नलों में 90 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें आई सी एम आर के कमला मेनन आयुर्विज्ञान अनुसंधान पुरस्कार, लाइफ साइंसेज़ में डॉ जगदीश बोस पुरस्कार तथा एस. आर. नाइक स्मारक पुरस्कार से पुरस्कृत होने का श्रेय प्राप्त है।

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



# DR. P.N.RAJU ORATION AWARD

## 2006

## CITATION

## DR. PREMASHISH KAR

Dr. P.N. Raju Oration Award was instituted in 1965 by Dr. Narasimha Raju, a Medical Practitioner of Vishakhapatnam. It is awarded to a scientist for his/her work in any subject of national importance in the field of Medicine or Public Health and is being offered in the field of Medicine (Clinical Research) for the year 2006.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Premashish Kar, Professor, Department of Medicine, MAMC & Associated Lok Nayak Hospital, New Delhi for his work on "Hepatitis A infection".

Dr. Kar's studies have shown that the sero-epidemiology of hepatitis A virus infection in the urban population of India seems to be changing with the seroprevalence in the younger population approaching a figure similar to the more developed European countries. The students in a health care set up should undergo vaccination against HAV after pre-vaccination immunity screening. Because of altered epidemiology and decreasing endemicity, the pattern of acute HAV infection is changing from asymptomatic childhood infection to an increased incidence of symptomatic disease in the 18-40 year age group, hence selective vaccination of the high risk population based on the serological studies of HAV antibody could be rational and cost effective. Dr. Kar's work suggests that both genotypes IA and IIIA are almost equally prevalent in northern India. His studies on acute Hepatitis A showed that the duration of viraemia is dependent on the host and the viral genotypes do not have apparent role in the clinical outcome of uncomplicated acute viral hepatitis cases compared to the severe type.

Dr. Kar has contributed more than 90 research papers in various journals. He has been bestowed with Kamla Menon Medical Research Award of ICMR, Dr.Jagdish Bose Award in Life Sciences and S.R. Naik Memorial Award.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ विद्या सागर पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ प्रभा एस. चन्द्रा

डॉ विद्या सागर पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1985 में स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ के मनोरोगविज्ञान विभाग के शिक्षकों द्वारा रोहतक स्थित मेडिकल कॉलेज के मनोरोगविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ विद्या सागर की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य करने वाले किसी श्रेष्ठ वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार बंगलौर स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान के मनोरोग विज्ञान विभाग की आचार्य डॉ प्रभा एस. चन्द्रा को ''मानसिक विकारों में लैंगिक एवं प्रजनन स्वास्थ्य'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ चन्द्रा ने मनोविकारों से ग्रस्त महिलाओं में चिकित्सीय और सेवा आधारित अनुसंधान कार्य किया है। ऐसी महिलाओं को प्रसवपूर्व और परिवार नियोजन सेवाओं की उपलब्धता नहीं होती, जिसके परिणामस्वरूप अनियोजित सगर्भता और शिशु जन्म संबंधी असंतोषजनक परिणाम की स्थितियां उत्पन्न होती हैं, इसलिए, डॉ चन्द्रा और उनके दल ने दक्षिण एशिया में प्रथम प्रसवकालीन आउट पेशेंट मनोरोग चिकित्सा सेवा की स्थापना की है, जो विकसित देशो में मनोविकारों से ग्रस्त महिलाओं के लिए उपलब्ध समान सेवाओं पर आधारित है। उन्होंने मनोविकारों से ग्रस्त लोगों में लैंगिक स्वास्थ्य के साथ-साथ यौन संचारित रोगों एवं एच आई वी के लिए खतरे वाले कारकों का भी अध्ययन किया है, जिसका भारत में निवारक उपायों और मानसिक रोगियों की समग्र सुरक्षा पर नीति विकसित करने में महत्वूपर्ण प्रभाव है। यह अध्ययन यौन हिंसा, बल प्रयोग और शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले इसके भावी प्रभावों को प्रलेखित करते हुए मानसिक रोग ग्रस्त महिलाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

डॉ चन्द्रा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 80 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। वे आई सी एम आर के तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार से सम्मानित हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

### DR. VIDYA SAGAR AWARD
### 2006

### CITATION
### DR. PRABHA S. CHANDRA

Dr. Vidya Sagar Award was instituted in 1985 by faculty of the Department of Psychiatry, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh, in memory of Dr. Vidya Sagar, former Professor of Psychiatry, Medical College, Rohtak. It is awarded to an eminent scientist for the outstanding contributions made in the field of Mental Health.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Prabha S. Chandra, Professor, Department of Psychiatry, National Institute of Mental Health & Neurosciences, Bangalore for her work on "Sexual and reproductive health in mental disorders".

Dr. Chandra has conducted clinical and service based research in women with psychiatric disorders. Such women do not access antenatal and family planning services leading to unplanned pregnancies and poor birth outcomes, therefore, Dr. Chandra and her team have set up the first Perinatal Outpatient Psychiatry Service in South Asia, which is based on similar services available for women with psychiatric disorders in the developed world. She has also studied the factors related to sexual health and risks for STDs and HIV among people with psychiatric disorders which have important implications for policy development in the holistic care of the mentally ill and preventive efforts in India. This research has also been of particular importance for women with mental illness by documenting sexual violence, coercion and its physical and mental health implications.

Dr. Chandra has more than 80 publications in national and international journals to her credit. She has been bestowed with Tilak Venkoba Rao Award of ICMR.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## डॉ वाई. एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ जे.एस. विरदी

डॉ वाई.एस. नारायण राव व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1972 में श्रीमती कमला नारायण राव ने अपने स्वर्गीय पति डॉ वाई. एस. नारायण राव, पूर्व निदेशक, किंग निवारक चिकित्साविज्ञान संस्थान, गिण्डी, चेन्नई की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार सूक्ष्मजीवविज्ञान के क्षेत्र में सतत शोध कार्य करने वाले किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार दिल्ली स्थित दिल्ली विश्वविद्यालय के सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग के रीडर डॉ जे.एस. विरदी को ''*यर्सीनिया एंटेरोकोलिटिका* के आण्विक जानपदिक रोगविज्ञान'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ विरदी के अध्ययनों से भारत में जल, खाद्य रिज़र्वायर (सूकर) और अतिसार ग्रस्त रोगियों में *वाई. एंटेरोकोलिटिका* की व्यापकता का संकेत मिलता है। भारतीय उपभेद (बायोटाइप 1ए) में विशिष्ट एंटीबायोटिक प्रतिरोध प्रोफाइल्स, बीटा-लैक्टामेज़ेज़ की परिवर्तनीय अभिव्यक्ति और सोडियम एसीटेट के उपयोग की क्षमता, आर्सेनाइट एवं अन्य भारी धातुओं के प्रति प्रतिरोध जैसी स्थितियां देखी गई हैं। इन उपभेदों में *यर्सीनिया* स्थाई आंत्रजीवविष के लिए *yst* जीन की उपस्थिति होती है जिससे जन स्वास्थ्य में इसके महत्व का संकेत मिलता है। भारतीय उपभेदों के डीएनए फिंगरप्रिंटिंग आंकड़े भी तैयार किए गए हैं। अपने देश में यर्सिनोसिस के प्रकोपों, यदि कोई हो, की उत्पत्ति का पता लगाने में भारतीय उपभेदों को एकत्र करना और उनका डाटाबेस तैयार करना बहुत उपयोगी होगा। आंत्ररोगजन के वैश्विक जानपदिक रोगविज्ञान के संदर्भ में इस अध्ययन से *वाई. एंटेरोकोलिटिका* की व्यापकता पर हमारी जानकारी भी बेहतर हुई है।

डॉ विरदी ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## DR. Y.S. NARAYANA RAO ORATION AWARD

### 2006

### CITATION

### DR. J.S. VIRDI

Dr.Y.S.Narayana Rao Oration Award was instituted by Smt. Kamala Narayana Rao in 1972, in memory of her husband, late Dr. Y.S.Narayana Rao, former Director of King Institute of Preventve Medicine, Guindy, Chennai. It is given to a scientist for carrying out sustained research work in the field of Microbiology.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. J.S.Virdi, Reader, Department of Microbiology, University of Delhi, New Delhi for his work on "Molecular epidemiology of *Yersinia enterocolitica*".

Dr. Virdi's studies indicate the prevalence of *Y.enterocolitica* in India in water, food reservoir (pigs) and patients of diarrhoea. The Indian strain (biotype 1A) has shown unique antibiotic resistance profiles, variable expression of β-lactamases and ability to utilize sodium acetate, resistance to aresenite and other heavy metals. These strains carry *yst B* gene for *Yersinia* stable enterotoxin indicating their public health significance. The DNA fingerprinting data of Indian strains has also been generated. The database and collection of Indian strains will be very helpful in tracking the origin of outbreaks of Yersiniosis, if any, in our country. This study has also improved our understanding of the prevalence of *Y.enterocolitica* in the context of the global epidemiology of this enteropathogen.

Dr. Virdi has more than 30 research publications in various national and international journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ मोली जैकब

आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ के.एन. सेन ने वर्ष 1977 में की थी तथा यह पुरस्कार श्रेष्ठ महिला वैज्ञानिकों को जैवआयुर्विज्ञान की किसी भी शाखा में उनके सराहनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार संयुक्त रूप से वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज के जीवरसायन विभाग की आचार्य डॉ मोली जैकब को ''नॉन-स्टेरॉयडल शोथज रोधी औषधियों (NSAIDs) के कारण छोटी आंत और वृक्कीय विषाक्तता के रोगजनन'' पर उनके कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ जैकब का कार्य NSAID प्रेरित आंत्रविकृति और वृक्क विकृति के क्षेत्र में हुई प्रगति से संबद्ध है, ये विकृतियां इस वर्ग की औषधियों की अनुक्रिया में उत्पन्न होती हैं। डॉ जैकब और उनके दल द्वारा संपन्न शोध कार्य से प्रदर्शित हुआ है कि एंज़ाइम साइक्लो ऑक्सीजिनेज़ पर प्रभावों के अतिरिक्त, NSAID-प्रेरण में छोटी आंत और वृक्क में माइटोकॉण्ड्रिया संबद्ध ऑक्सीकर फॉस्फोरिलीकरण अलग हो जाता है और उसका संदमन हो जाता है। यह परिकल्पना की गई है कि इन अंगों में इन औषधियों द्वारा उत्पन्न प्रभावों के विकृतिजनन में ऑक्सीकर दबाव और माइटोकॉण्ड्रिया की दुष्क्रिया महत्वपूर्ण है। इसलिए, NSAIDs द्वारा साइक्लो-ऑक्सीजिनेज़ का संदमन एकमात्र प्रक्रिया नहीं है जिसके द्वारा ये औषधियां प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने NSAID-प्रेरित आंत्रविकृति में जीवाणुओं की भूमिका का भी अध्ययन किया है। इसलिए, NSAIDs के प्रतिकूल प्रभावों की प्रक्रियाओं की जानकारी मे सुधार होने तथा क्षति को घटाने की नीतियों से रोगियों द्वारा प्रयुक्त इन औषधियों के बेहतर अनुपालन में सहायता मिलेगी।

डॉ जैकब को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। उनके शोध कार्य के सम्मान में उन्हें क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर के प्रतिष्ठित फादर लोर्डू एम. येदनापल्ली एस जे मेडल से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## ICMR KSHANIKA ORATION AWARD

### 2006

### CITATION

### DR. MOLLY JACOB

The Kshanika Oration Award was instituted in 1977 by Dr.K.N.Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Kolkata to be given to eminent women scientists for their meritorious work carried out in any of the branches of Biomedical Sciences.

The award for the year 2006 is being jointly presented to Dr. Molly Jacob, Professor, Department of Biochemistry, Christian Medical College, Vellore for her work on "Pathogenesis of small intestinal & renal toxicities due to Non-Steroidal Anti-Inflammatory Drugs (NSAIDS)".

Dr. Molly Jacob's work represents advances in the field of NSAID induced enteropathy and nephropathy, well recognised entities that occur in response to this group of drugs. The work done by Dr. Jacob and her group has shown that in addition to the effects on enzyme cyclooxygenase, NSAID-induced uncoupling and inhibition of mitochondrial oxidative phosphorylation occurs in the small intestine and the kidney. It has been postulated that oxidative stress and mitochondrial dysfunction are important in the pathogenesis of the adverse effects produced by these drugs in these organs. Hence inhibition of cyclo-oxygenase by NSAIDs is not the sole mechanism by which these drugs cause adverse effects. In addition, she has also studied the role played by bacteria in NSAID-induced enteropathy. Therefore, the improvement of understanding of the mechanisms of adverse effects of NSAIDs and strategies to reduce damage would help improving patient's compliance in the use of these drugs.

Dr. Jacob has more than 30 publications in various international and national journals to her credit. She is the recipient of Rev. Fr. Lourdu M.Yeddanapalli SJ Medal of CMC Vellore in recognition of her research output.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ रेनू सक्सेना

आई सी एम आर क्षणिका व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ के.एन. सेन ने वर्ष 1977 में की थी तथा यह पुरस्कार श्रेष्ठ महिला वैज्ञानिकों को जैवआयुर्विज्ञान की किसी भी शाखा में उनके सराहनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार संयुक्त रूप से नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के रुधिरविज्ञान विभाग की आचार्य डॉ रेनू सक्सेना को ''भारत में रक्तस्रावी और स्कंदन विकारों के हेतुक विकृतिजनन और उनकी आण्विक आनुवंशिकी की व्याख्या'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सक्सेना ने भारत में उपार्जित एवं वंशागत रक्तस्रावी और स्कंदन विकारों के मूल में विकृतिजनन की व्याख्या करने में महत्वूपर्ण योगदान दिया है उन्होंने डी आई सी के निदान हेतु डी डाइमर परीक्षण की सीमा बद्धता का प्रदर्शन किया है और वंशागत स्कंदन विकारों के मूल में आण्विक दोषों (ज्ञात और नवीन दोषों) की पहचान की है। उन्होंने वाहक की पहचान करने और प्रसवपूर्व निदान हेतु धनात्मक पारिवारिक इतिहास सहित हीमोफीलिया ग्रस्त रोगियों में 85 प्रतिशत की प्रभावकारिता, अनियमित हीमोफीलिया ग्रस्त रोगियों में 52 प्रतिशत की प्रभावकारिता के साथ इंट्रॉन 22 और एक इनवर्ज़न तथा शेष होमोफीलिया ग्रस्त रोगियों में कॉर्ड रक्त फैक्टर आमापनों के साथ लिंकेज विश्लेषण का प्रयोग किया है। डॉ सक्सेना ने vWD, ग्लांज़मांस थ्रॉम्बएस्थीनिया और फैक्टर XIII अल्पता जैसे वंशागत दर्लभ स्कंदन और प्लेटलेट कार्य संबंधी विकारों सहित भारतीय रोगियों में नवीन उत्परिवर्तनों की पहचान की और उनके वाहक की पहचान हेतु रिस्ट्रिक्शन फ्रैगमेंट लेंथ पॉलीमॉर्फिज़्म को विकसित किया है। उन्होंने पृथक्कृत PF3 उपलब्धता दोष को अत्यन्त सामान्य वंशागत प्लेटलेट कार्य विकार के रूप में प्रदर्शित किया है तथा इस स्थिति में पहली बार सोयाबीन उपचार की उपयोगिता को स्पष्ट किया है।

डॉ सक्सेना को मालती साठे व्याख्यान पुरस्कार, प्रोफेसर दिनकर चन्द्र स्मारक व्याख्यान पुरस्कार और आई सी एम आर के बी जी आर सी रजत जयन्ती व्याख्यान पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है । उन्होंने 180 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



## ICMR KSHANIKA ORATION AWARD
### 2006

### CITATION
### DR. RENU SAXENA

The Kshanika Oration Award was instituted in 1977 by Dr. K.N.Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Kolkata to be given to eminent women scientists for their meritorious work carried out in any of the branches of Biomedical Sciences.

The award for the year 2006 is being jointly presented to Dr. Renu Saxena, Professor, Department of Haematology, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi for her work on "Elucidation of etiopathogenesis and molecular genetics of bleeding and coagulation disorders in India".

Dr. Saxena has contributed significantly to the elucidation of pathogenesis underlying acquired and inherited bleeding and coagulation disorders in India. She has demonstrated the limitation of D dimer test for diagnosis of DIC, and has identified the underlying molecular defects (known and novel defects) in inherited coagulation disorders. She has used linkage analysis with an efficacy of 85% in hemophilics with positive family history, Intron 22 and one inversion with efficacy of 52% in sporadic hemophilics and cord blood factor assays in the remaining hemophilics for carrier detection and prenatal diagnosis. Dr. Saxena has identified novel mutations in the Indian patients with inherited rare coagulation and platelet function disorders like vWD, Glanzmann's Thrombasthenia and factor XIII deficiency and has developed Restriction Fragment Length Polymorphism for their carrier detection. She has shown isolated PF3 availability defect to be the commonest inherited Platelet Function Disorder and has demonstrated for the first time the usefulness of Soyabean Therapy in this condition.

Dr. Saxena has been felicitated with many prestigious awards including Malti Sathe Oration, Prof. Dinkar Chandra Memorial Oration Award and BGRC Silver Jubilee Oration Award of ICMR. She has more than 180 research publications to her credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ एम.के. दास

अल्पविकसित क्षेत्रों में जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार की संस्थापना परिषद द्वारा वर्ष 1983 में की गई थी। यह पुरस्कार उन वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है जिन्हें देश के अल्पविकसित क्षेत्रों में कार्य करने हेतु अनुदान प्रदान किया गया हो और जिन्होंने जैवआयुर्विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की रांची स्थित फील्ड यूनिट के प्रभारी अधिकारी डॉ एम. के. दास को ''रोगवाहक जन्य रोगों'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ दास रोगवाहक जन्य रोगों के क्षेत्र में एक प्रशिक्षित जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिक हैं। उन्होंने देश के सुदूर जनजातीय क्षेत्रों (कार नीकोबार द्वीप, अण्डमान एवं नीकोबार द्वीप समूह) में स्थानिक मलेरिया पर नियंत्रण रखने की एक बड़ी चुनौती के साथ लगभग 15 वर्षो तक कार्य किया है। डॉ दास ने कार नीकोबार में जैवपर्यावरणी तरीके से मलेरिया नियंत्रण की योजना बनाई और उसे कार्यान्वित किया तथा किसी कीटनाशी के प्रयोग बिना मलेरिया की घटनाओं को निम्नतम स्तरों पर ला दिया। उनके शोधकार्य ने इस रोग के खतरे वाले कारकों और नियंत्रण विधियों की पहचान करने एवं उन्हें स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे कार नीकोबार स्थित स्वास्थ्य सेवा विभाग को और सैनिकों को उपयुक्त इलाज में सहायता मिली तथा उसके परिणामस्वरूप रुग्णता और मर्त्यता दरों में भारी गिरावट आई। जैव पर्यावरणी नियंत्रण नीति द्वारा मलेरिया पर नियंत्रण रखना अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि में सम्मिलित है।

डॉ दास ने विभिन्न जर्नलों में 40 से अधिक वैज्ञानिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। अण्डमान एवं नीकोबार द्वीप समूह के जनजातीय परिषद और समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड द्वारा उनके विशाल योगदानों को मान्यता प्रदान की गई और उनकी सराहना की गई।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

# ICMR PRIZE FOR BIOMEDICAL RESEARCH CONDUCTED IN UNDERDEVELOPED AREAS

## 2006

## CITATION

### DR. M.K. DAS

The ICMR Prize for biomedical research conducted in underdeveloped areas was instituted by the Council n 1983 for scientists who have contributed significantly to any field of biomedical sciences and is granted for the work carried out in under developed areas of the country.

The prize for 2006 is being presented to Dr. M. K. Das, Officer-in-Charge, National Institute of Malaria Research, Field Unit, Ranchi for his research work on "Vector borne diseases".

Dr. Das is a trained biomedical scientist in the field of vector borne diseases. He has worked in the remote tribal areas (Car Nicobar Island, Andaman & Nicobar Islands) of the country for almost 15 years with a big challenge to control endemic malaria. Dr. Das planned and executed the bioenvironmental malaria control in Car Nicobar and brought down malaria to very low levels without the use of any insecticide. His research played a vital role in identifying and establishing the risk factors and methods of control of disease which helped the Department of Health Services and Defence Personnel at Car Nicobar in giving proper treatment and thereby bringing down the morbidity and mortality rate drastically. The most important achievement included controlling malaria by bio-environmental control strategy.

Dr. Das has published more than 40 scientific papers in various journals. His immense contributions have been recognised and appreciated by the Tribal Council & Social Welfare Advisory Board of Andaman & Nicobar Islands.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञानी अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ पी. सुन्दरेशन

अल्पसुविधा प्राप्त समुदायों के वैज्ञानिकों के लिए जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान हेतु आई सी एम आर पुरस्कार की संस्थापना भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1983 में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/पिछड़े वर्ग के वैज्ञानिकों के लिए की गई थी। यह पुरस्कार किसी शोध वैज्ञानिक को जैवआयुर्विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट और सतत योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार मदुरई स्थित अरविन्द आयुर्विज्ञान अनुसंधान फाउण्डेशन, अरविन्द नेत्र अस्पताल के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ पी. सुन्दरेशन को ''वंशागत नेत्र रोगों पर आण्विक आनुवंशिकी'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सुन्दरेशन वंशागत नेत्र रोगों हेतु आनुवंशिक परीक्षणों को विकसित करने पर कार्यरत रहे हैं । उनके शोध दल ने नेत्र रोग में SLC 4A11 नामक एक नवीन जीन की पहचान की है जो जन्मजात वंशागत अंत:कला अपविकास के लिए जिम्मेदार होता है और भारतीय आबादी में अनेक नेत्र रोगों से संबद्ध जीनों में आण्विक आनुवंशिक विभिन्नताओं पर भी अध्ययनों की शुरुआत की। ग्लूकोमा के ज्ञात जीनो में उत्परिवर्तनों की जांच तथा प्राइमरी ओपेन एंगल ग्लूकोमा ग्रस्त रोगियों में मायोसिलिन के आनुवंशिक एवं संरचनात्मक विश्लेषण का भी अध्ययन किया गया है जिससे एक सहज एवं त्वरित निदान हेतु एक मैक्रोचिप विकसित किया जा सके। ऑकुलोक्युटेनियस अल्बीनिज़्म टाइप 1 (OCA 1) सहित भारतीय वंशों में OCA 1 पर एक उल्लेखनीय योगदान दिया गया है जहां TYR जीन में दो नवीन डिलीशंस और एक नॉन सेंस उत्परिवर्तन की पहचान की गई है। इन अध्ययनों से प्रारंभिक अवस्था में रोग की पहचान करने तथा आबादी में इस रोग भार को घटाने हेतु आनुवंशिक परामर्श देने में सहायता मिलेगी।

डॉ सुन्दरेशन ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

# ICMR PRIZE FOR BIOMEDICAL RESEARCH FOR SCIENTISTS BELONGING TO UNDERPRIVILEGED COMMUNITIES

2006

## CITATION

### DR. P. SUNDARESAN

The ICMR Prize for biomedical research for scientists belonging to underprivileged communities was instituted by ICMR in 1983 for scientists belonging to Scheduled Caste/Scheduled Tribe/Backward Classes. This prize is offered to a research scientist for his/her outstanding and sustained contributions in any field of Biomedical Sciences.

The prize for 2006 is being presented to Dr. P. Sundaresan, Senior Scientist, Aravind Medical Research Foundation, Aravind Eye Hospital, Madurai for his research work on "Molecular genetics on inherited eye diseases".

Dr. Sundaresan has been working on developing genetic tests for inherited eye diseases. His research group identified a new eye disease gene SLC 4A11 which causes congenital hereditary endothelial dystrophy and also initiated studies on the molecular genetic variations in the genes involved in many eye diseases in Indian population. The genetic and structural analysis of myocilin in primary open angle glaucoma patients and screening for mutations in the known glaucoma genes has been studied to devise a macro-chip to facilitate an easy and rapid diagnosis. A noteworthy contribution has been made on Oculocutaneous Albinism type 1 (OCA1) in Indian OCA pedigrees where two novel deletions and a nonsense mutation in the TYR gene have been identified. These investigations will help in early diagnosis of the disease and for genetic counseling to reduce the disease load on the population.

Dr. Sundaresan has published more than 30 research papers in journals of national and international repute.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ अरुणा मित्तल

आई सी एम आर लाला राम चन्द कंधारी पुरस्कार की संस्थापना नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के त्वचाविज्ञान एवं रतिरोग विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो के.सी. कंधारी द्वारा उनके स्वर्गीय पिता की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार त्वचाविज्ञान और यौन संचारित रोगों के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु किसी वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान की वैज्ञानिक 'एफ' डॉ अरुणा मित्तल को ''भारत में *क्लैमाइडिया ट्रैकोमैटिस* संक्रमण'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ मित्तल ने क्लैमाइडिया के लिए स्वदेशी नैदानिक आमापन के विकास तथा *क्लैमाइडिया* संबद्ध रोगजनन से जुड़े जैवचिन्हकों (रोगजन और परपोषी दोनों) की पहचान की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने भारत में पहली बार भारतीय रोगी से प्राप्त एक आइसोलेट से *सी. ट्रैकोमैटिस* के प्रति जाति विशिष्ट मोनोक्लोनल प्रतिपिण्डों और सीरोवैर को विकसित किया है जिसका आजकल क्लैमाइडिया संक्रमण के निदान में प्रयोग किया जा रहा है। उन्होंने जीनोटाइपिंग द्वारा भारतीय महिला रोगियों के जनन पथ में उच्च रोगजनकता के सीरोवैर्स की भी पहचान की है। गर्भाशय ग्रीवा की लसीका कोशिकाओं के साथ संपन्न उनके अध्ययनों से क्लैमाइडिया के हीट शॉक प्रोटीनों और इंटरफेरॉन-गामा की भूमिका सहित क्लैमाइडिया संक्रमणों के रोगजनन से संबद्ध विभिन्न प्रक्रियाओं का पता चला है। वर्तमान में उनकी मुख्य प्राथमिकता का क्षेत्र डेण्ड्राइटिक कोशिकाओं और *सी. ट्रैकोमैटिस* के प्रति प्रतिरक्षा के प्रेरण और उसकी क्षमता पर सेक्स हॉर्मोनों के प्रभाव का अध्ययन करना है जिससे एक वैक्सीन विकसित की जा सके जो महिला प्रजनन पथ में एक संरक्षी म्युकोसल प्रतिरक्षा अनुक्रिया प्रेरित कर सके।

डॉ मित्तल को 40 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने आई सी एम आर का शकुन्तला अमीर चन्द पुरकार भी प्राप्त किया है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## ICMR LALA RAM CHAND KANDHARI AWARD
### 2006

## CITATION
### DR. ARUNA MITTAL

The ICMR Lala Ram Chand Kandhari Award was instituted by Prof. K.C.Kandhari, former Head of the Department of Dermtology and Venerology, AIIMS, New Delhi, in memory of his late father. It is given to a scientist for research in the field of Dermatology and Sexually Transmitted Diseases.

The Award for the year 2006 is being presented to Dr. Aruna Mittal, Scientist 'F', Institute of Pathology, ICMR, New Delhi for her work on "*Chlamydia trachomatis* infection in India".

Dr. Aruna Mittal has made significant contributions towards development of indigenous diagnostic assay for Chlamydia and identification of biomarkers (both pathogen and host) involved in chlamydial pathogenesis. She has developed for the first time in India, the serovar and species specific monoclonal antibodies to *C.trachomatis* from an isolate of Indian patient, which are currently being used for diagnosis of chlamydia infection. She has also identified the serovars of high pathogenecity in the female genital tract of Indian women patients by genotyping. Her studies with cervical lymphocytes have revealed various mechanisms involved in the pathogenesis of chlamydial infections including the role of chlamydial heat shock proteins and interferon-gamma. Presently, her major thrust area is the study of dendritic cells and the influence of sex hormones on induction and potentiation of immunity to *C.trachomatis* in order to develop a vaccine which could induce a protective mucosal immune response in female reproductive tract.

Dr. Mittal has more than 40 research publications to her credit. She has also received Shakuntala Amir Chand Prize of ICMR.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## आई सी एम आर एम.एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ अनिल भंसाली

आई सी एम आर एम. एन. सेन व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1977 में कोलकाता स्थित स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के चिकित्साविज्ञान के पूर्व आचार्य डॉ के. एन. सेन द्वारा उनके भ्राता श्री एम.एन. सेन की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को चिकित्साविज्ञान (चिकित्सीय, प्रयोगशाला अथवा उपचारार्थ) के क्षेत्र में सतत शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के अंत:स्रावीविज्ञान विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ अनिल भंसाली को ''पिट्यूटरी विकारों'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ भंसाली के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बृहत् और विशाल प्रोलैक्टिनोमा सहित पुरुषों में डोपामाइन एगोनिस्ट (प्रचालक) प्रथम पंक्ति की चिकित्सा प्रस्तुत करते हैं। पिट्यूटरी अर्बुदों सहित रोगियों में विकिरण प्रेरित मस्तिष्क विकारों (आर आई बी डी) की उपस्थिति सामान्य नहीं होती और वे परम्परागत विकिरण चिकित्सा का परिणाम होते हैं। उनके अध्ययनों से देखा गया है कि विकिरण प्रेरित मस्तिष्क विकारों में चिकित्सीय और विकिरणविज्ञानी अभिव्यक्तियां सुस्पष्ट परन्तु घटती-बढ़ती रहती हैं। सामान्य व्यक्तियों में वृद्धि हॉर्मोन के स्राव को प्रेरित करने हेतु उच्च मात्राओं में मॉर्फीन की आवश्यकता होती है और सक्रिय एक्रोमेगेली सहित रोगियों में वृद्धि हॉर्मोन के स्राव पर ओपिऑयड्स का एक अनुकूल नियमनकारी प्रभाव पड़ता है। जिससे पिट्यूटरी अर्बुद के आंशिक ऑटोनॉमी का संकेत मिलता है। यह भी देखा गया है कि डोपामाइन द्वारा अथवा डोपामाइन रिसेप्टर ब्लॉकर द्वारा डोपामीनर्जिक प्रणाली के नियमन का यूथाइरॉयड सहित सामान्य व्यक्तियों की तुलना में प्राथमिक हाइपोथाइरॉयडिज़्म सहित रोगियों में थाइरोट्रॉपिन स्राव पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। पिट्यूटरी विकारों सहित रोगियों में एड्रीनोकॉर्टिकल रिज़र्व (संचय) का मूल्यांकन करने हेतु एड्रीनोकॉर्टिकोट्रॉपिन परीक्षण के लिए प्रात:कालीन समय को वरीयता दी जानी चाहिए। डॉ भंसाली क्लैम्प अध्ययनों हेतु एक मधुमेहज पाद (फुट) प्रयोगशाला और सुविधाओं की स्थापना से भी संबद्ध हैं।

डॉ भंसाली ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में 60 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें डॉ शूरवीर सिंह ट्रस्ट आयुर्विज्ञान वैज्ञानिक पुरस्कार तथा डॉ पी.एन. शाह व्याख्यान पुरस्कार से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

### ICMR M.N. SEN ORATION AWARD
### 2006

### CITATION

### DR. ANIL BHANSALI

Dr. M.N. Sen Oration Award was instituted in 1977 by Dr. K.N.Sen, former Professor of Medicine, School of Tropical Medicine, Kolkata in memory of his brother Shri M.N.Sen. This award is given to a scientist for the sustained researech work carried out in the field of Practice of Medicine (clinical, laboratory or therapeutic).

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Anil Bhansali, Professor and Head, Department of Endocrinology, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh for his work on 'Pituitary disorders'.

Dr. Bhansali's studies suggest that in males with macro and giant prolactinomas, dopamine agonists represent the first line therapy. Radiation Induced Brain Disorders (RIBD) in patients with pituitary tumors are uncommon and are the consequences of conventional radiotherapy. His studies have shown that RIBDs have distinctive but varying clinical and radiological presentations. Higher doses of morphine are required to stimulate growth hormone secretion in normal subjects and opioids exert a positive modulating effect on growth hormone secretion in patients with active acromegaly suggesting partial autonomy of the pituitary tumor. It has also been shown that modulation of dopaminergic system by dopamine or by dopamine receptor blocker has a great influence on thyrotropin secretion in patients with primary hypothyroidism than in euthyroid normal subjects. Adrenocorticotropin test in patients with pituitary disorders to assess adrenocortical reserve should preferably be performed during mornings. Dr. Bhansali is also involved in establishing a diabetic foot lab and facilities for clamp studies.

Dr. Anil Bhansali has more than 60 publications in various national and international scientific journals. He has been awarded Dr. Shurveer Singh Trust Medical Scientist Award and Dr. P.N.Shah Oration Award.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ ओम प्रकाश

जालमा न्यास निधि व्याख्यान पुरस्कार एशिया के लिए जापान कुष्ठरोग मिशन द्वारा प्रदान किये गए धन सहाय से भारत में कुष्ठरोग पर मिशन के कार्य की स्मृति में प्रारम्भ किया गया था। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को कुष्ठरोग और अन्य माइकोबैक्टीरियल रोगों के क्षेत्र में उनके सतत शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार आगरा स्थित राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान के वैज्ञानिक 'डी' डॉ ओम प्रकाश को ''कुष्ठरोग की सीरमविज्ञानी पहचान'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ प्रकाश कुष्ठरोग की सीरमविज्ञानी पहचान विधि को बेहतर बनाने संबंधी अध्ययन से सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। उन्होंने कुष्ठरोगियों विशेषतया अल्पदण्डाणुयुक्त (पी बी) वर्ग के रोगियों की पहचान करने में *माइकोबैक्टीरियम लेप्री* के कुछ नवीन प्रतिजनों के कार्य की खोज की है। संयुक्त रूप से रूपांतरित आमापनों के प्रयोग से विकसित नीतियों से अल्पदण्डाणुयुक्त रोगियों की पहचान हेतु सुग्राह्यता 82 प्रतिशत से अधिक बेहतर हो गई, और परम्परागत PGL-1 आधारित एलाइज़ा से एक गुणा (45%) अधिक सुधार देखा गया। इन सीरमविज्ञानी प्रयासों को रसायनचिकित्सा की प्रभावकारिता की निगरानी करने, चिकित्सा के उद्देश्य से कुष्ठरोगियों को बहुदण्डाणुयुक्त (एम पी) और अल्पदण्डाणुयुक्त (पी बी) वर्गों में वर्गीकृत करने, पुनः रोगग्रस्त होने की शुरुआत का पता लगाने, उपचार के दौरान उच्च खतरे की संभावना वाली प्रतिक्रियाओं सहित रोगियों की पहचान करने तथा किसी आबादी में *एम. लेप्री* संक्रमण के विस्तार में होने वाले परिवर्तनों की निगरानी में प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ प्रकाश ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय वैज्ञानिक जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## JALMA TRUST FUND ORATION AWARD

## 2006

## CITATION

## DR. OM PARKASH

The JALMA Trust Fund Oration Award was instituted with funds donated by the Japan Leprosy Mission for Asia to commemorate the Mission's work on leprosy in India. The award is conferred upon a scientist for sustained research activity in the field of Leprosy and other mycobacterial diseases.

The award for 2006 is being presented to Dr. Om Parkash, Scientist 'D', National JALMA Institute for Leprosy and Other Mycobacterial Diseases, Agra for his research work on "Serological detection of Leprosy".

Dr. Parkash has been actively engaged in studying improvement regarding serological detection of leprosy. He has explored the performance of some new *Mycobacterium leprae* antigens in detection of leprosy patients, particularly those belonging to the Paucibacillary (PB) group. The strategies evolved by using modified assays in a joint fashion improved the sensitivity for detection of PB patients to above 82%; giving more than one fold improvement (45%) over conventional PGL-1 based ELISA. These serological approaches could be explored in monitoring the effectiveness of chemotherapy, in classifying leprosy patients into MB and PB groups for treatment purposes, in detecting the emergence of relapse, in identifying patients with a high risk of reactions during therapy and in monitoring changes in the magnitude of *M. leprae* infection in a population.

Dr. Parkash has published more than 30 research papers in various international and national scientific journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ शशिरेखा रमणी

इस पुरस्कार की संस्थापना मेजर जनरल साहेब सिंह सोखे की इच्छा के अनुसार की गई थी, और यह पुरस्कार एक वैज्ञानिक को संचारी रोगों के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है जिससे इस क्षेत्र में मौजूदा ज्ञान में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई हो।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज में जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग की *दि वेलकम ट्रस्ट रिसर्च लेबोरेटरी* की वरिष्ठ शोध फेलो डॉ शशिरेखा रमणी को ''रोटावाइरस संक्रमण'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ शशिरेखा के अध्ययनों से नवजात शिशुओं और अस्पताल में भर्ती बच्चों में रोटावाइरस संक्रमण के विषय में गहन जानकारी प्राप्त हुई है अध्ययनों से देखा गया है कि नवजात शिशुओं में रोटावाइरस के संक्रमण सदैव अथवा सर्वाधिक अलाक्षणिक नहीं होते और निर्धारित अवधि से पूर्व जन्मे बच्चों में इससे पक्षाघात होना प्रतीत नहीं होता, जैसे कि पूर्व धारणा थी। निगरानी के दौरान बच्चों में संक्रमण के एक महत्वपूर्ण कारण के रूप में एक नवीन जीनोटाइप, G12 उभर कर आया है। डॉ शशिरेखा के अध्ययन से मिले आंकड़ों ने परिसंचरणशील/उभरते उपभेदों पर निगरानी रखने/उनकी पहचान करने हेतु एक उपभेद निगरानी घटक को सम्मिलित करने तथा रोटाविषाणुओं की जानपदिक रोगविज्ञानी प्रोफाइल के साथ टीकाकारण नीतियों को रखने को सुनिश्चित करने की आवश्यकता को प्रबलित किया है। उनके अध्ययनों से आंत्र संक्रमणों में स्वाभाविक और अर्जित प्रतिरक्षा को बढ़ाने हेतु संभावित इंटरवेंशंस के निर्धारण का आधार बना है, विशेषतया विकासशील देशों के लिए महत्वपूर्ण है जहां बच्चों में वैक्सीनों के प्रति प्रतिरक्षा अनुक्रिया प्राय: क्षीण होती है।

डॉ शशिरेखा ने वैज्ञानिक जर्नलों में लगभग 15 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## MAJOR GENERAL SAHEB SINGH SOKHEY AWARD

### 2006

### CITATION

### DR. SASIREKHA RAMANI

This award was instituted in 1988 in accordance with the will of Major General Saheb Singh Sokhey and is granted to a scientist for his/her outstanding contributions in the field of Communicable Diseases, significantly adding to the existing knowledge in the field.

The award for 2006 is being presented to Dr. Sasirekha Ramani, Senior Research Fellow, The Wellcome Trust Research Laboratory, Department of Gastrointestinal Sciences, Christian Medical College, Vellore for her research work on "Rotavirus infection".

Dr. Sasirekha's studies have provided valuable insights into rotavirus infection in neonates and in hospitalized children. The studies have shown that rotaviral infections in neonates are not always or predominantly asymptomatic and do not appear to have a predilection for premature infants as has been believed in the past. A new genotype, G12 has emerged as an important cause of infection in children during surveillance. The data from Dr. Sasirekha's study has reinforced the necessity to include a strain surveillance componant for monitoring/detecting the circulatory/ emerging strains and to ensure that vaccination strategies keep up with the epidemiologic profile of rotaviruses. Her studies also form the basis to determine potential interventions for boosting innate and acquired immunity in enteric infections, particularly siginficant in developing countries where the immune response of children to vaccines is frequently impaired.

Dr. Sasirekha has publshed about 15 research papers in scientific journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ सुनीता सक्सेना

कैंसर के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार की संस्थापना मूल रूप से वर्ष 1970 में कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में मेसर्स सैण्डोज़ इंडिया लिमिटेड द्वारा की गई थी और वर्ष 1997 में हिन्दुस्तान सीबा-गाइगी लिमिटेड के साथ उसके विलय के उपरांत यह पुरस्कार नोवार्तिस व्याख्यान पुरस्कार के नाम में परिवर्तित कर दिया गया। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में कैंसर के नियंत्रण, निवारण और उपचार के लिए मान्य उनके योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान की निदेशक डॉ सुनीता सक्सेना को ''भारतीय महिलाओं में स्तन कैंसर'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ सक्सेना ने उत्तर-भारतीय महिलाओं में स्तन कैंसर की चिकित्सीय-जानपदिक रोगविज्ञानी विशेषताओं का अध्ययन किया है तथा इसकी पारिवारिक सम्बद्धता होने एवं कम आयु में इस रोग की शुरुआत होने का वर्णन करने वाली वे प्रथम वैज्ञानिक हैं। डॉ सक्सेना ने उच्च खतरे की संभावना सहित स्तन कैंसर के ग्रस्त रोगियों में BRCA ½ उत्परिवर्तनों की व्यापकता पर भी प्रथम रिपोर्ट प्रकाशित की है। चिकित्सा पूर्व एवं चिकित्सा पश्चात् नमूनों में p- ग्लाइकोप्रोटीन अभिव्यक्ति पर सम्पन्न उनके शोध कार्य से निओएड्ज्यूवैंट रसायन चिकित्सा के प्रति असंतोषजनक अनुक्रिया का संकेत मिलता है तथा अर्जित प्रतिरोध की घटना की व्याख्या होती है। डॉ सक्सेना के परिणामों से संकेत मिलता है कि युवा भारतीय महिलाओं में स्तन कैंसर के विकास में CYP17A 2 एलील जीन पॉलीमॉर्फिज़्म की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा यह चिकित्सा के लिए एक लक्ष्य के रूप में भी कार्य कर सकती है।

विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में डॉ सक्सेना ने 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

# INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## NOVARTIS ORATION AWARD
## 2006

## CITATION
## DR. SUNITA SAXENA

The Novartis Oration Award for research in the field of Cancer was originally instituted in 1970 by M/s Sandoz India Limited in the field of Cancer Research and renamed as Novartis Oration Award after the merger of Sandoz India Ltd with Hindustan Ciba-Geigy Ltd in 1997. This prize is conferred upon a scientist for his/her contributions in the field of cancer research carried out for the control, prevention and cure of cancer.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Sunita Saxena, Director, Institute of Pathology(ICMR), New Delhi for her work on "Breast cancer in Indian women".

Dr. Saxena has studied the clinico-epidemiological features of breast cancer in North Indian women and is the first to report the familial affiliation and younger age of onset of disease. Dr. Saxena has also published the first report on prevalence of BRCA 1/2 mutations in high risk patients of breast cancer. Her work on expression of p-glycoprotein in pre and post-therapy samples indicate poor respose to neoadjuvant chemotherapy and explains the phenomenon of acquired resistance. Dr. Saxena's findings suggest that CYP17AZ allele gene polymorphism plays a significant role in breast cancer development in young Indian women and can also serve as a target for therapy.

Dr. Saxena has more than 50 research publications in various national and international journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## प्रो बी.सी. श्रीवास्तव संस्थापना पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ विनोद जोसेफ अब्राहम

इस पुरस्कार की संस्थापना लखनऊ स्थित किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के निवारक एवं सामाजिक चिकित्साविज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष स्वर्गीय प्रो बी. सी. श्रीवास्तव के छात्रों और सह कर्मियों द्वारा वर्ष 1987 में की गई थी। यह पुरस्कार मेडिकल कॉलेजों /मान्यता प्राप्त संस्थानों में सामुदायिक चिकित्साविज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य करने वाले वैज्ञानिक को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज के सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग के सह आचार्य डॉ विनोद जोसेफ अब्राहम को ''समुदाय आधारित जराचिकित्सा'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ अब्राहम द्वारा मर्त्यता पर तैयार किए गए समुदाय आधारित आंकड़ों के फलस्वरूप वयोवृद्ध आबादी में आत्मघात की पहचान मृत्यु के एक प्रमुख कारण के रूप में हुई है। किशोरवय एवं वयोवृद्ध आयु वर्ग में मृत्यु की घटनाओं के साथ आत्मघात का बाइमोडल स्वरूप पाया गया है। डॉ अब्राहम ने परिवार के सदस्यों द्वारा वयोवृद्ध और घर में योगदान नहीं देने वाले व्यक्तियों की अवहेलना करने जैसे खतरे वाले कारकों का अध्ययन किया है, बाद में उनमें आत्म-सम्मान में कमी और अवसाद जैसी स्थितियां विकसित हो जाती हैं । इन परिणामों के आधाार पर डॉ अब्राहम ने वेल्लोर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में वयोवृद्ध लोगों के लिए सामुदायिक ''डे केयर'' (दिवस देखभाल) केन्द्रों को स्थापित करने में उल्लेखनीय पहल एवं नवीनता प्रदर्शित की है तथा उनकी जीवन गुणवत्ता पर समुदाय आधाारित ''डे केयर'' प्रदान करने के प्रभावों का आकलन भी किया है।

डॉ अब्राहम ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में लगभग 9 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## PROF. B.C. SRIVASTAVA FOUNDATION AWARD

**2006**

### CITATION

### DR. VINOD JOSEPH ABRAHAM

This award was instituted in 1987 by the students and colleagues of late Prof. B.C.Srivastava, Head of the Department of Preventive and Social Medicine, KG Medical College, Lucknow. It is awarded to a scientist for work in the field of Community Medicine carried out in medical colleges/recognized institutions.

The Award for the year 2006 is being presented to Dr. Vinod Joseph Abraham, Associate Professor, Community Health Department, Christian Medical College,Vellore for his work on "Community based geriatrics".

The generation of community based data on mortality by Dr. Abraham lead to the identification of suicide as a major cause of death in the elderly population. Suicide was found to have a bimodal distribution, with deaths in the adolescent and in the elderly age groups. Dr. Abraham investigated the risk factors such as neglect of family members of elderly, non-productive individuals, who then developed low self-esteem and depression. Based on these findings, Dr. Abraham has shown remarkable initiative and innovation in establishing community day care centres for the elderly in rural areas in Vellore District and also assessed the impact of providing community based day care on the quality of their life.

Dr. Abraham has about 9 research publications in various national and international journals to his credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## प्रो बी. के. ऐकत व्याख्यान पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ राकेश अग्रवाल

इस पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1984 में डॉ मीरा ऐकत द्वारा उनके पति प्रो बी. के. ऐकत, एक जैवआयुर्विज्ञानी वैज्ञानिक की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार किसी वैज्ञानिक को उष्णकटिबंधीय रोगों के क्षेत्र में शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है, जिससे इस क्षेत्र के मौजूदा ज्ञान में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई हो।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार लखनऊ स्थित संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान के जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग के अतिरिक्त आचार्य डॉ राकेश अग्रवाल को ''यकृतशोथ ई: जानपदिकरोगविज्ञान एवं विकृतिजनन'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ अग्रवाल द्वारा संपन्न शोध कार्य के परिणामस्वरूप भारत में तीव्र यकृतशोथ के लिए जिम्मेदार अतिसामान्य कारण के रूप में यकृतशोथ ई विषाणु (HEV) की रोगजानपदिकी, चिकित्सीय एवं प्रयोगशाला पहलुओं पर जानकारी में वृद्धि हुई है। लखनऊ में एक प्रकोप के दौरान डॉ अग्रवाल द्वारा सम्पन्न अध्ययनों में रोगस्थानिक क्षेत्रों में रोग संचरण के लिए लम्बी अवधि तक उत्सर्जन को एक रिज़र्वायर के रूप में पाया गया है। डॉ अग्रवाल के कार्य के द्वारा प्रथम बार तीव्र यकृतशोथ ई सहित रोगियों में प्रतिजन-विशिष्ट T लिम्फोसाइट्स की उपस्थिति प्रदर्शित की गई है। उनके अध्ययनों के द्वारा यह भी दर्शाया गया है कि पूर्व-उपस्थित स्थाई यकृत सिरोसिस के रोगियों में यकृतशोथ ई विषाणु क्षति अपूर्ति का सामान्य कारण है। डॉ अग्रवाल के ताजा अध्ययनों में कई जन्तु प्रजातियों में HEV के प्रति प्रतिपिण्डों तथा सूअर से प्राप्त मल नमूनों में HEV लाइक RNA अनुक्रमों की उपस्थिति प्रदर्शित की गई है। हालांकि, एक ही क्षेत्र से यकृत HEV के RNA अनुक्रमों से इन जीनोमिक अनुक्रमों में उल्लेखनीय अन्तरों से संकेत मिलता है कि मानव HEV रोग में जन्तु HEV की कोई भूमिका नहीं हो सकती।

डॉ अग्रवाल ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 130 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें जे मित्रा स्मारक पुरस्कार, आई सी एम आर के मेजर जनरल साहब सिंह सोखे तथा डॉ धरमवीर दत्ता स्मारक पुरस्कारों से सम्मानित होने का श्रेय प्राप्त है।

# PROF. B.K. AIKAT ORATION AWARD
## 2006

## CITATION

## DR. RAKESH AGGARWAL

This award was instituted by Dr. Meera Aikat in 1984 in memory of her husband Prof. B.K.Aikat, a biomedical scientist. It is conferred upon a scientist for the research in the field of Tropical Diseases, the work significantly adding to the existing knowledge in the field of tropical diseases.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Rakesh Aggarwal, Additional Professor, Department of Gastroenterology, Sanjay Gandhi Postgraduate Institute of Medical Sciences, Lucknow for his work on "Hepatitis E: Epidemiology and pathogenesis".

The work done by Dr. Aggarwal has led to advancement in the knowledge about epidemiological, clinical and laboratory aspects of Hepatitis E Virus (HEV) infection, the commonest cause of acute hepatitis in India. The studies conducted by Dr. Aggarwal during an outbreak in Lucknow, excluded prolonged excretion as a reservoir for disease transmission in endemic areas. Dr. Aggarwal's work has shown for the first time the presence of antigen - specific T lymphocytes in patients with acute hepatitis E. His studies have also shown that HEV is a common cause of decompensation in patients with pre-existing stable liver cirrhosis. Recent studies of Dr. Aggarwal have shown the presence of antibodies against HEV in several animal species and of HEV-like RNA sequences in stools obtained from pigs. However, significant differences in these genomic sequences from RNA sequences of liver HEV, from same region, indicates that animal HEV may not play a role in human HEV disease.

Dr. Aggarwal has more than 130 research publications in various national and international scientific journals. He has been awarded the J Mitra Memorial Award, Major General Saheb Singh Sokhey and Dr. Dharamvir Dutta Memorial Awards of ICMR.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## प्रो सुरिन्दर मोहन मारवाह पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ हरबीर सिंह कोहली

इस पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1993 में प्रो सुरिन्दर मोहन मारवाह द्वारा की गई थी और यह पुरस्कार किसी भारतीय वैज्ञानिक को भारत में सतत अनुसंधान के माध्यम से वयोवृद्ध लोगों की समस्याओं के हल के लिए वयोवृद्धि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदानों के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के वृक्कविज्ञान विभाग के अतिरिक्त आचार्य डॉ हरबीर सिंह कोहली को ''वयोवृद्ध लोगों में वृक्क असफलता'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ कोहली ने वयोवृद्ध लोगों में वृक्क असफलता के स्पेक्ट्रम का अध्ययन किया है। उन्होंने गैर-वृक्कीय कारणों से अस्पताल में भर्ती होने वाले तथा अस्पताल में अर्जित तीव्र वृक्क पात विकसित वयोवृद्ध लोगों में नैदानिकी तथा चिकित्सीय इंटरवेंशन की समस्या की पहचान की है। तीव्र वृक्कीय असफलता की रोकथाम के लिए कन्ट्रास्ट एवं संभावित वृक्क विषाक्त औषधियों का विवेकपूर्ण प्रयोग न्यायसंगत होता है। उनके कार्य के द्वारा केवल वृक्कीय असफलता प्रदर्शित करने वाले वयोवृद्ध लोगों में मल्टीपल माइलोमा (मज्जार्बुद) की आशंका की आवश्यकता रेखांकित हुई है। उनके द्वारा संपन्न भविष्यप्रभावी अध्ययनों के परिणामस्वरूप वयोवृद्ध लोगों में वृक्क बायोप्सी (जीवऊति परीक्षा) अपनाने के भय को कम किया गया है। उनके शोध कार्य से वृक्क असफलता सहित वयोवृद्ध लोगों के चिकित्सा प्रबंध में महत्वपूर्ण योगदान मिला है। वयोवृद्ध लोगों में अन्तिम अवस्था के वृक्क रोगों का चिकित्सा परिणाम निराशाजनक होता है, इसलिए वृक्क पात की घटना की रोकथाम अथवा इसकी वृद्धि को विलम्बित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

डॉ कोहली ने 70 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्हें युवा अनुसंधानकर्ता पुरस्कार तथा बंसल व्याख्यान पुरस्कार प्राप्त होने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## PROF. SURINDAR MOHAN MARWAH AWARD

**2006**

### CITATION

### DR. HARBIR SINGH KOHLI

This award was instituted in 1993 by Prof. Surindar Mohan Marwah and is given to an Indian scientist for significant contributions in the field of Geriatrics through sustained research in India on the problems of the aged.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Harbir Singh Kohli, Additional Professor of Nephrology, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh for his work on "Renal failure in eldely".

Dr Kohli has studied the spectrum of renal failure in elderly. He has identified the problem of diagnostic and therapeutic interventions in elderly who are admitted for non-renal causes and develop hospital acquired acute renal failure. For prevention of acute renal failure, judicious use of contrast and potential nephrotoxic drugs is warranted. The need to suspect multiple myeloma in elderly presenting with renal failure alone has been highlighted by his work. The fear of doing kidney biopsies in elderly has been allayed by the prospective studies he has undertaken. His work has made a significant contribution to the clinical management of elderly with renal failure. Outcome of end stage renal diseases in elderly is dismal hence attempt should be made to prevent or delay the progression of renal failure.

Dr. Kohli has more than 70 research publications to his credit. He has received Young Investigator Award and Bansal Oration Award.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ श्याम एस. शर्मा

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार मोहाली, पंजाब स्थित राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एन आई पी ई आर) के भेषजगुणविज्ञान और विषविज्ञान विभाग के सह आचार्य डॉ श्याम एस. शर्मा को ''प्रमस्तिष्कीय स्थानिक अरक्तता में परॉक्सीनाइट्राइट पॉली (एडीपी राइबोज़) पॉलीमिरेज़ पाथवे को लक्षित तंत्रिका संरक्षी संभावित भेषजगुणविज्ञानी इंटरवेंशंस'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ शर्मा ने राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान में तंत्रिका संरक्षी कारकों के लिए औषध खोज एवं विकास हेतु आधुनिकतम आघात (स्ट्रोक) अनुसंधान सुविधा को स्थापित किया है। उनके शोध कार्य ने आघात के विकृति शरीर क्रियाविज्ञान में पराक्सीनाइट्राइट -पॉली (एडीपी- राइबोज़) पॉलीमिरेज़ (पी ए आर पी) कास्केड की संबद्धता को ज्ञात करने तथा इस कास्केड को लक्षित भेषजगुणविज्ञानी इंटरवेंशंस की तंत्रिका संरक्षी संभाव्यता के मूल्यांकन की दिशा में योगदान दिया है। उनके अध्ययन परिणामों से आघात के विकृति शरीरक्रियाविज्ञानी में गहन जानकारी प्राप्त हुई है तथा संकेत मिलता है कि साथ-साथ परॉक्सीनाइट्राइट-पी ए आर पी पाथवे को लक्षित करना लाभकारी होता है।

डॉ शर्मा ने अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में 30 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। उन्होंने फार्मास्युटिकल उद्योगों के साथ अनेक परामर्श परियोजनाओं को भी पूर्ण किया है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

### 2006

### CITATION

### DR. SHYAM S. SHARMA

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Shyam S. Sharma, Associate Professor, Dept. of Pharmacology and Toxicology, National Institute of Pharmaceutial Education and Research (NIPER) Mohali, Punjab for his work on "Neuroprotective potential pharmacological interventions targeted at peroxynitrite poly (ADP-ribose) polymerase pathway in cerebral ischemia".

Dr. Sharma has established state-of-the-art stroke research facility for the drug discovery and development of neuroprotective agents at NIPER. His research has contributed towards understanding the involvement of peroxynitrite-poly (ADP-ribose) polymerase (PARP) cascade in stroke pathophysiology and in evaluation of neuroprotective potential of pharmacological interventions targeting this cascade. His findings have provided new insight into the pathophysiology of stroke and suggest that simultaneous targeting of peroxynitrite-PARP pathway is beneficial in stroke.

Dr. Sharma has published more than 30 research papers in international and national journals. He has also carried out several consultancy projects with pharmaceutical industries.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ सुरिन्दर सिंह राणा

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार चण्डीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के जठरांत्ररोगविज्ञान विभाग के सह आचार्य डॉ सुरिन्दर सिंह राणा को ''पोर्टल अतिरक्तदाब में इलियोपैथी'' पर उनके शोधकार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ राणा के अध्ययन के परिणामस्वरूप पोर्टल अतिरक्तदाब संबद्ध इलियोपैथी और इलियम शिरास्फीति के बीच संबंध का प्रथम बार वर्णन किया गया है। उनके शोधकार्य से प्रदर्शित हुआ है कि इलियोपैथी की स्थिति सामान्यतया पोर्टल अतिरक्तदाब से ग्रस्त रोगियों में पाई जाती है और इसकी एण्डोस्कोपिक जांच से मिले परिणाम पोर्टल बृहदांत्रविकृति के लिए ज्ञात लक्षणों के समान पाए गए हैं। डॉ राणा ने इलियोपैथी के चिकित्सीय महत्व के निर्धारण की आवश्यकता को बल दिया है, क्योंकि ये विक्षतियां तीव्र अथवा चिरकारी अधो-जठरांत्रीय रक्तस्राव का संभावित कारण हो सकती हैं।

डॉ राणा जठरांत्ररोगविज्ञान के क्षेत्र में अपने शोध कार्य के लिए *अमेरिकन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एण्डोस्कोपी* (ए एस जी ई) के डॉन विल्सन पुरस्कार से सम्मानित हैं। उन्होंने वैज्ञानिक जर्नलों में 50 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE

### 2006

### CITATION

### DR. SURINDER SINGH RANA

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Surinder Singh Rana, Associate Professor, Department of Gastroenterology, Post Graduate Institute of Medical Education and Research, Chandigarh for his work on "Ileopathy in portal hypertension".

Dr. Rana's study is the first to describe the association of portal hypertensive ileopathy and ileal varices. His work has shown that ileopathy commonly occurs in patients with portal hypertension and its endoscopic features are similar to the features described for portal colopathy. Dr. Rana has highlighted the need to determine the clinical significance of ileopathy since these lesions could be a potential cause of acute or chronic lower gastrointestinal bleeding.

Dr. Rana is the receipient of the Don Wilson Award of American Society of Gastrointestinal Endoscopy (ASGE) for his work in the area of gastroenterology. He has published more than 50 papers in scientific journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ जी. वेंकटसुब्रामणियन

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार बंगलौर स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान के मनश्चिकित्सा के सहायक आचार्य डॉ जी. वेंकटसुब्रामणियन को ''मनश्चिकित्सा में चिकित्सीय, तंत्रिका शरीर रचना और तंत्रिकारासायनिक अनुसंधान'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ वेंकटसुब्रामणियन के पथप्रदर्शक शोध कार्य से स्थापित हुआ है कि मनोविक्षिप्ति रोधी-नाइव सीज़ोफ्रीनिया में इंसुलिन लाइक ग्रोथ फैक्टर (आई जी एफ-1) की अल्पता और आई जी एफ-1 के निम्न स्तरों के परिणामस्वरूप मस्तिष्क में तंत्रिकाविकास में ह्रास के प्रति अतिसंवेदनशीलता हो सकती है जिससे अंतत: सीज़ोफ्रीनिया विकसित होने की संभाव्यता होती है। उन्होंने यह भी अध्ययन किया है कि मनोविक्षिप्ति रोधी-नाइव सीज़ोफ्रीनिया ग्रस्त रोगियों में अनुमस्तिष्कीय मृदु चिन्ह अधिक होते हैं जो ''बोधात्मक अपमिति'' स्थिति के लिए सहायक होते हैं। डॉ वेंकटसुब्रामणियन ने सीज़ोफ्रीनिया फॉस्फोरस मैगनेटिक रेज़ोनैंस स्पेक्ट्रोस्कोपी में आधारी गैंग्लिया के तंत्रिका रासायनिक कोरिलेट्स को स्थापित किया है। प्रतिवर्तों के विकास के तंत्रिका रासायनिक आधाार की सीज़ोफ्रीनिया में उच्च ऊर्जा फॉस्फेट असामान्यताओं के साथ संबद्धता होती है। उनके अध्ययनों से भारत में अल्कोहलिज़्म (मदिरा पान) के लिए उच्च खतरे की संभावना वाले व्यक्तियों के मस्तिष्क में कॉर्पस कोलोसम में असामान्यताएं प्रदर्शित हुई हैं। इससे अल्कोहलिज़्म के विषय में मनोशिक्षण हेतु एक महत्वपूर्ण अवलोकन और आनुवंशिक डाएथेसिस को बल मिलता है।

डॉ वेंकटसुब्रामणियन आई सी एम आर के तिलक वेंकोबा राव पुरस्कार और स्कोपस युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित हैं। उन्हें 40 से अधिक शोध पत्रों को प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

## SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
2006

## CITATION
DR. G. VENKATASUBRAMANIAN

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. G.Venkatasubramanian, Assistant Professor of Psychiatry, National Institute of Mental Health and Neurosciences, Bangalore for his work on "Clinical, neuroanatomical & neurochemical research in psychiatry".

Dr. Vankatasubramanian's pioneering work has established the deficiency of Insulin-like Growth Factor (IGF-1) in antipsychotic-naïve schizophrenia and the low IGF-I levels might render the brain to be more vulnerable to neurodevelopmetal insults potentially culminating in schizophrenia. He has also studied that antipsychotic-naïve schizophrenia patients have more cerebellar soft signs supporting 'cognitive dysmetria'. Dr. Venkatasubramanian has established the neurochemical correlates of basal ganglia abnormalities in schizophrenia phosphorus magnetic resonance spectroscopy. The neurochemical basis of development reflexes involve high energy phosphate abnormalities in Schizophrenia. His studies have shown brain abnormalities in corpus callosum in subjects at high risk for alcoholism in India. This highlights the genetic diathesis and an important observation for psychoeducation about alcoholism.

Dr. Venkatasubramanian has been awarded Tilak Venkoba Rao Award of ICMR and Scopus Young Scientist Award. He has more than 40 research publications to his credit.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ रुचि सिंह

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए युवा वैज्ञानिकों को प्रदान किए जाने वाले शकुन्तला अमीर चन्द पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1953 में स्वर्गीय मेजर जनरल अमीर चन्द ने अपनी पुत्री की स्मृति में की थी। यह पुरस्कार चिकित्सीय अनुसंधान सहित जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी विषय पर सर्वोत्तम प्रकाशित शोध कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की वैज्ञानिक 'सी' डॉ रुचि सिंह को ''उत्तर कालाज़ार त्वक् लीशमैनियता में निदान, औषण अनुक्रिया और अन्तरायिक जीन अभिव्यक्ति पर अध्ययनों'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ रुचि सिंह ने उत्तर कालाज़ार त्वक् लीशमैनियता (पी के डी एल) के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। उन्होंने कालाज़ार विशेषतया पी के डी एल में लीशमानिया संक्रमण की पहचान करने के लिए वर्धित सुग्राह्यता के साथ अमास्टीगोट आधारित डाइरेक्ट एग्लूटिनेशन परीक्षण विकसित किया है, निम्न परजीवी भार के कारण पी के डी एल का निदान एक प्रमुख चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। यह पी के डी एल के निदान हेतु एक विश्वसनीय और सस्ता परीक्षण है जिसमें फील्ड स्थितियों में प्रयोग करने की संभाव्यता है। डॉ सिंह के अध्ययनों ने भारत में सोडियम एंटीमनी ग्लूकोनेट प्रतिरोध की उच्च व्यापकता में पी के डी एल की भूमिका को स्थापित किया है जहां इसका संचरण एंथ्रोपोनोटिक है और पी के डी एल एक रिज़र्व्यायर है। उनके शोध कार्य ने कालाज़ार और पी के डी एल के भारतीय उपभेदों के बीच आण्विक भिन्नताओं को भी प्रदर्शित किया है जिससे इन रोगों की चिकित्सीय अभिव्यक्तियों में विविधता रेखांकित हो सकती है।

डॉ सिंह लाइफ साइंसेज़ में युवा महिलाओं के लिए यूनेस्को लॉरियल फेलोशिप से पुरस्कृत हैं। उन्होंने विभिन्न जर्नलों में 10 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH



## SHAKUNTALA AMIR CHAND PRIZE
## 2006

## CITATION

### DR. RUCHI SINGH

The Shakuntala Amir Chand Prize was instituted in 1953 by late Major General Amir Chand in memory of his daughter for significant research contributions by young scientists in biomedical sciences. This prize is awarded for the best published research work on any subject in the field of biomedical sciences including clinical research.

The award for the year 2006 is being presented to Dr. Ruchi Singh, Scientist 'C', National Institute of Malaria Research, New Delhi for her work on "Studies on diagnosis, drug response and differential gene expression in Post Kala Azar Dermal Leishmaniasis".

Dr. Ruchi Singh has studied various aspects of Post Kala Azar Dermal Leishmaniasis (PKDL). She has developed amastigote based Direct Agglutination Test with increased sensitivity to detect the Leishmania infection in Kala-Azar (KA), especially in PKDL where diagnosis presents a major challenge owing to low parasite burden. It is a reliable and inexpensive test for PKDL diagnosis with potential for applicability in field conditions. Dr. Singh's studies have also established the role of PKDL in high prevalence of Sodium Antimony Gluconate resistance in India where transmission is anthroponotic and PKDL is a reservoir. Her work has also shown molecular differences between Indian isolates of KA and PKDL which may underline the diversity in clinical manifestations of these diseases.

Dr. Ruchi Singh has been awarded with UNESCO L'oreal fellowship for young women in life sciences. She has published more than 10 research publications in various journals.

# भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

## श्रीमती कमल सतबीर पुरस्कार

## 2006

## प्रशस्ति

## डॉ बालमुगेश थंगाकुनम

श्रीमती कमल सतबीर पुरस्कार की संस्थापना वर्ष 1987 में कमोडोर सतबीर द्वारा उनकी पत्नी की स्मृति में की गई थी। यह पुरस्कार अयक्ष्मज वक्ष रोगों विशेषतया श्वसनी प्रत्यूर्जता और चिरकारी अवरोधी फुप्फुस रोगों के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदानों से संबद्ध वैज्ञानिकों को प्रदान किया जाता है।

वर्ष 2006 का यह पुरस्कार वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के फुप्फुस चिकित्साविज्ञान विभाग के परामर्शदाता डॉ बालमुगेश थंगाकुनम को ''महिलाओं में फुप्फुस कैंसर'' पर उनके शोध कार्य के लिए प्रदान किया जा रहा है।

डॉ थंगाकुनम ने महिलाओं में फुप्फुस कैंसर के संभावित खतरे वाले कारकों का अध्ययन करने हेतु शोध कार्य किया है, क्योंकि महिलाओं में केवल धूम्रपान से इस स्थिति की व्याख्या नहीं की जा सकती । इस अध्ययन से बहुत महत्वपूर्ण परिणाम मिले हैं जिसके परिणामस्वरूप बायोमास ईंधन के हानिकारक प्रभावों के प्रति एक जागरूकता हुई है। घरों के भीतर वायु प्रदूषण विशेषतया बायोमास ईंधन के प्रभाव (74.6%) और फेफड़े के कैंसर के बीच ठोस संबंध पाया गया है, क्योंकि इस अध्ययन में सम्मिलित बड़ी संख्या में भारतीय महिलाएं धूम्रपान नहीं करती थीं। यह सूचना न केवल चिकित्सकों के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि धुआं रहित चिमनियों के प्रयोग और बेहतर संवातित रसोई घरों युक्त उत्तम घरेलू सुविधाओं के संदर्भ में जन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । ये इंटरवेंशंस भारतीय महिलाओं में फुप्फुस कैंसर के खतरे को कम करने में प्रभावी साधन हो सकते हैं।

डॉ थंगाकुनम ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जर्नलों में लगभग 30 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं।

## INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH

### SMT.KAMAL SATBIR AWARD
### 2006

### CITATION

### DR. BALAMUGESH THANGAKUNAM

Smt. Kamal Satbir Award was instituted in 1987 by Commodore Satbir in memory of his wife. It is offered to individuals for outstanding contributions in the field of non-tuberculous Chest Diseases, especially Respiratory Allergy and Chronic Obstructive Lung Diseases.

The award for 2006 is being presented to Dr. Balamugesh Thangakunam, Consultant, Department of Pulmonary Medicine, Christian Medical College and Hospital, Vellore for his research work on "Lung cancer in women".

Dr. Thangakunam has conducted research to study risk factors of lung cancer in women, since smoking alone does not explain this condition in women. The study had very important findings, leading to an awareness of the harmful effects of biomass fuel. Indoor air pollution especially biomass fuel exposure (74.6%), was found to have strong associatioin to lung cancer since a high percentage of Indian women in the study were non smokers. This information is not only important for physicians but also has a great implication for improvement of public health, in terms of having good housing facilities with better-ventilated kitchens and use of smokeless chimneys. These interventions could be effective means of reducing the risk of lung cancer in Indian women.

Dr. Thangakunam has published about 30 research papers in various international and national journals.

Layout Design & Production Control by ICMR Press Unit
Printed at M/s Royal Offset Printers, A-89/1, Naraina Industrial Area, Phase-I, New Delhi-110 028

## ICMR AWARDS & PRIZES

The Indian Council of Medical Research (ICMR) recognizes the contributions made by the Indian biomedical scientists working in various fields of health sciences by rewarding them with a number of awards and prizes every year. The pioneering work carried out by distinguished scientists contributes towards finding a solution to the health problems of the country. The prestige associated with these awards adds value to the untiring efforts of our scientists and gives impetus to their efforts to work harder. This kind of national recognition is also a stepping stone for the Indian scientists aspiring for international recognition.

ICMR offers an array of awards in biomedical sciences. Majority of the awards are annual while few are given on alternate years. In addition to the awards given for the meritorious work carried out by scientists in a particular field of science, there are a number of awards to recognize and adorn the scientific talent of young scientists. There are specific awards to encourage the scientists working in the underdeveloped parts of the country and also the scientists belonging to the underprivileged communities and championing the cause of their section of society. An exclusive award has been instituted for women scientists to acknowledge the arduous task undertaken by them for being a homemaker as well as a successful professional.

Indian Council of Medical Research
V. Ramalingaswami Bhawan
Ansari Nagar, New Delhi-110029
Phone: 91-11-26588980, 26589794, 26588895
E-mail: headquarters@icmr.org.in
Website: http://www.icmr.nic.in